टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED

टीएचडीसी

पहल

राजभाषा गृह–पत्रिका

अंक: 38 जनवरी – जून, 2026

कारपोरेट कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

श्री सिपन कुमार गर्ग, प्रबंध निदेशक की अध्यक्षता में मार्च, 2026 की तिमाही में 16 मार्च, 2026 को कारपोरेट कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन एवं निगम में राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा

श्री सिपन कुमार गर्ग, प्रबंध निदेशक की अध्यक्षता में जून, 2026 को समाप्त तिमाही में 29 जून, 2026 को कारपोरेट कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन एवं निगम में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति की समीक्षा

प्रबंध निदेशक का संदेश

प्रिय साथियो,

मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की लोकप्रिय राजभाषा पत्रिका 'पहल' का इस बार 38वां अंक (जून, 2026) प्रकाशित हो रहा है। राजभाषा पत्रिका 'पहल' निगम के कार्मिकों की साहित्यिक अभिरुचि, तकनीकी कौशल और राजभाषा हिंदी के प्रति अगाध प्रेम का जीवंत दर्पण है।

हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर और राष्ट्रीय चेतना की संवाहिका है। आज के वैश्विक परिदृश्य में हिंदी की उपयोगिता और अधिक बढ़ गई है। हिंदी अब केवल साहित्य की भाषा नहीं रही, बल्कि यह वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयोग में भी पूरी तरह सक्षम और अग्रणी सिद्ध हो रही है। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग सरकारी कामकाज में सरल, सहज और व्यावहारिक हिंदी के प्रयोग को लेकर प्रतिबद्ध है, जिससे सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बल मिला है। कठिन शब्दों के स्थान पर आम बोलचाल की भाषा का उपयोग कर हम राजभाषा को जन–जन तक पहुंचा सकते हैं। सरकारी संस्थानों के द्वारा प्रकाशित की जा रही राजभाषा पत्रिकाएं इस दिशा में मील का पत्थर साबित हो रही हैं, जो ज्ञान–विज्ञान, तकनीकी विषयों और रचनात्मक लेखन के माध्यम से हिंदी के प्रचार–प्रसार को एक नई गति प्रदान करती हैं। कंप्यूटर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल मीडिया के दौर में हिंदी अपनी वैज्ञानिक लिपि और सुगमता के बल पर सुदृढ़ वैश्विक पहचान बना रही है।

यह हमारे लिए गर्व की बात है कि भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में टीएचडीसी के प्रयासों की निरंतर सराहना की जाती रही है। इस गरिमा को बनाए रखने के लिए मेरा आप सभी से आग्रह है कि राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2026–27 के लिए जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप पूरी निष्ठा से कार्य करें। भारत सरकार के आदेशों और अपेक्षाओं के अनुरूप हमारे सभी अधिकारी व कर्मचारी अपने दैनिक सरकारी कामकाज में मूल रूप से हिंदी में कार्य करने की आदत डालें। टिप्पणियां, प्रारूपण और पत्राचार मूल रूप से हिंदी में करने से न केवल कार्यकुशलता बढ़ेगी, बल्कि राजभाषा के प्रति हमारा दायित्व भी पूर्ण होगा।

मुझे पूरा विश्वास है कि 'पहल' का यह 38वां अंक सभी कार्मिकों में राजभाषा के प्रति नई ऊर्जा और प्रेरणा का संचार करेगा। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं इसके संपादक मंडल और सभी कर्मचारी लेखकों एवं रचनाकारों को शुभकामनाएं देता हूं।

आइए, हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी को और अधिक समृद्ध बनाने का संकल्प लें।

जय हिन्द!

(सिपन कुमार गर्ग)
प्रबंध निदेशक

मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) का संदेश

प्रिय साथियो,

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका के 38वें अंक के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। मुझे पूरा विश्वास है कि जनवरी से जून, 2026 के मध्य आयोजित हुई राजभाषा से संबंधित गतिविधियों को समेटे हुए यह अंक सभी के लिए रूचिकर सिद्ध होगा। संपादक मंडल का सदैव प्रयास रहता है कि यह पत्रिका हर बार नए कलेवर में प्रकाशित हो और इसमें ज्ञानवर्धक सामग्री का समावेश हो।

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड सदैव ही राजभाषा नियमों के शत–प्रतिशत अनुपालन और इसके सुदृढ़ कार्यान्वयन के लिए प्रतिबद्ध है। जिसके परिणामस्वरूप इस छमाही के दौरान हमारे निगम ने राजभाषा के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण और गौरवशाली उपलब्धियां दर्ज की हैं, जिनमें निगम के एनसीआर कार्यालय, कौशांबी को क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार (तृतीय) प्राप्त होना एवं कारपोरेट कार्यालय को नराकास वैजयंती शील्ड योजना के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार प्राप्त होना शामिल है।

इस छमाही में 22 से 25 मई, 2026 को मसूरी में माननीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उपसमिति के द्वारा उत्तराखंड एवं आस–पास की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों तथा उनके सदस्य संस्थानों का राजभाषा निरीक्षण एवं विचार–विमर्श कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिनमें टीएचडीसी की अध्यक्षता में संचालित हो रही नराकास हरिद्वार एवं नराकास टिहरी के साथ इनके सदस्य संस्थानों का राजभाषा निरीक्षण अत्यंत सफल रहा। इसी क्रम में नराकास चमोली के अंतर्गत आने वाले निगम के वीपीएचईपी पीपलकोटी कार्यालय का निरीक्षण भी सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इन निरीक्षणों के अतिरिक्त माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति के द्वारा 19 जनवरी, 2026 को नई दिल्ली में किए गए एनसीआर कार्यालय, कौशांबी एवं 25 जून, 2026 को नैनीताल में किए गए कोटेश्वर यूनिट कार्यालय के राजभाषा निरीक्षण भी सफलतापूर्वक संपन्न हुए।

इन गरिमामयी और महत्वपूर्ण निरीक्षणों तथा विचार–विमर्श कार्यक्रमों के सफलतापूर्वक संपन्न होने तथा पुरस्कार के रूप में प्राप्त हुई उपलब्धियों के पीछे निगम के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की कड़ी मेहनत छिपी हुई है जिसके लिए मैं निगम के सभी कार्मिकों को साधुवाद देता हूं तथा आशा करता हूं कि भविष्य में भी इसी प्रकार मेहनत एवं लगन से कार्य करते हुए हम सफलता के नए सोपान तय करेंगे।

(डॉ अमर नाथ त्रिपाठी)
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)

पहल

हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
की राजभाषा गृह पत्रिका
(अंक–38)

मुख्य संरक्षक
श्री सिपन कुमार गर्ग
प्रबंध निदेशक

संरक्षक
डॉ. अमर नाथ त्रिपाठी
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)

सलाहकार एवं मार्गदर्शक
श्री डी.पी.पात्रो
अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)
श्री अनिल पी. मुंडू
उप महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)

संपादक
श्री पंकज कुमार शर्मा
उप प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन सहयोग
श्री संतोष तुकाराम टेलकीकर
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
श्री नरेश सिंह
सहायक अधिकारी (राजभाषा)
श्रीमती हेमलता कौर एवं ममता गौड़
कनि. अधिकारी (राजभाषा)

संपर्क सूत्र
संपादक
"पहल"
हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
भागीरथी भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड,
ऋषिकेश–249201, उत्तराखंड
दूरभाष : 0135–2473614
ई–मेल: pankajksharma@thdc.co.in
thdchindi@gmail.com

पहल पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। इनसे टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

विषय सूची

लेख / निबंध / संस्मरण / समीक्षा

1. हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का आपसी सामंजस्य 4
2. हिंदी पत्रकारिता की 200 वर्षों की यात्रा 6
3. माँ का पल्लू 8
4. पूंजीगत व्यय और राष्ट्र निर्माण में इसकी भूमिका 9
5. हिंदी पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा (एआई) तक 11
6. फोटो अच्छी हो या न हो, 'इमेज' अच्छी होनी चाहिए 14
7. टीएचडीसी और टिहरी: ऊर्जा विकास की गौरवगाथा 16
8. द साइकोलॉजी ऑफ मनी – पुस्तक का सारांश 17

कविताएं

9. फूलों की मनमोहकता 20
10. मरहम–आँसुओं का 21
11. भागीरथीपुरम : प्रकृति और प्रगति 21
12. विजयी 22
13. हम हैं टीएचडीसी 22
14. सेवानिवृत्ति की संध्या 23
15. अदृश्य लहरें 23
16. बचपन की यादें 24
17. बस इतनी–सी आजादी 25
18. सेहत का संग्राम 25
19. मेरा नववर्ष 26
20. फूलों की वसीहत 27

राजभाषा गतिविधियां एवं कार्यक्रम

21. हिंदी अनुभाग की ओर से 28
22. हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन 30
23. विभागाध्यक्षों ने किया कार्मिकों को पुरस्कृत 33
24. प्रतियोगिताओं का आयोजन 33
25. दूसरी उप समिति के द्वारा राजभाषा निरीक्षण 34
26. आलेख एवं साक्ष्य उपसमिति के द्वारा राजभाषा निरीक्षण ... 35
27. विद्युत मंत्रालय के अधिकारियों के द्वारा राजभाषा निरीक्षण .. 36
28. कारपोरेट कार्यालय में 05 दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण 38
29. नराकास हरिद्वार की 41वीं अर्धवार्षिक बैठक संपन्न 39
30. अंग्रेजी के लोकप्रिय मुहावरे और उनके हिंदी पर्याय 40

हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का आपसी सामंजस्य

लेख

यशवंत सिंह नेगी
कनि. अधिकारी (राजभाषा), खुर्जा

हिंदी के मूल में भारतवर्ष की संस्कृति एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाएं एक–दूसरे की पूरक हैं। राष्ट्र के उत्थान एवं समृद्धि में भिन्न–भिन्न संस्कृतियां एवं राष्ट्रभाषा, मातृभाषा एवं कार्यालयीन भाषा अहम योगदान प्रदान करती हैं। किसी भी सभ्यता और संस्कृति के उन्नयन एवं विकास के दौर में भाषा की अपनी अहम भूमिका होती है। जाति अथवा समुदाय विशेष के संस्कार, उसकी आत्मा एवं प्राण उसकी अपनी भाषा में निहित होते हैं। इतिहास को टटोलकर देखें तो भारत की आत्मा और भारत के सूक्ष्म संस्कारों का निवास संस्कृत तथा हिंदी भाषा में केंद्रित है। संस्कृत एवं हिंदी भारतीय जनमानस की सेवा वर्षों पूर्व से करती चली आ रही हैं। आदिकाल से ही मूलतः भारतीय सांस्कृतिक विस्तार की सतत ऐतिहासिक विकास यात्रा में हिंदी के साथ–साथ भारतीय क्षेत्रीय भाषाओं का भी अथक प्रभावशाली वर्चस्व रहा है। भारत भूमि पर संस्कृतियों एवं सभ्यताओं के जन्म के साथ–साथ भिन्न–भिन्न भाषाओं व बोलियों की उत्पत्ति हुई और भिन्न–भिन्न कालखंडों में उनका सांस्कृतिक विकास होकर लिपिबद्ध विस्तार होता रहा है। कालांतर में भारतीय पृष्ठभूमि पर समय परिवर्तन के साथ कितने ही ऐतिहासिक सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक सुधार हुए, जिनके विस्तार में हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के आपसी सामंजस्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

लगभग दो सौ वर्षों के साम्राज्यवाद एवं पाश्चात्य संस्कृति के दंश को सहन करने के पश्चात भी भारतीय जन–मानस के मस्तिष्क पटल पर अपनी गहरी छाप छोड़ते हुए हिंदी भाषा दूसरी भारतीय भाषाओं की मदद से भारतीय संस्कृति पर ही नहीं अपितु वैश्विक स्तर पर भी विस्तृत रूप से प्रभावशाली होती जा रही है। विदेशी आक्रांताओं के भारत भूमि पर कदम पड़ने के पश्चात मुगलों के दमन चक्र एवं ब्रिटिश साम्राज्य की पराधीनता से अभिशप्त कालखंड भारतीय समाज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने के बावजूद भी हिंदी सभी 22 प्रादेशिक भाषाओं के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए भारतीय सभ्यता–संस्कृति के वैभव को विस्तृत करने में सक्षम रही है। अपनी सहज–सरलता के मौलिक गुणों की मूल प्रवृति को हिंदी ने भारतीय सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के परिवेश पर साहित्य, कला, चलचित्र, गीत संगीत व नृत्य नाटिकाओं के माध्यम से गहरी छाप छोड़ते हुए हिंदी अपनी परिपक्वता को सुदृढ़ करने में निरंतर सफल होती रही है।

इसके अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं एवं विदेशी भाषा के शब्दों को हिंदी ने बड़ी सहजता एवं सजग प्रवाह से स्वयं में आत्मसात करते हुए भारतीय सांस्कृतिक विरासत को विस्तार देने में अहम भूमिका अदा की है। जहां तक भाषा का प्रश्न है, भारत वर्ष में अनेक भाषाओं की लिपि देवनागरी है, जिसके कारण सभी भारतीय भाषाएं हिंदी के साथ अपना तालमेल ठीक प्रकार से स्थापित करने में सक्षम हैं। हिंदी संस्कारित भाषा होने के साथ–साथ एक वैज्ञानिक भाषा भी है। हिंदी जैसे बोली जाती है, वैसे ही लिखी और पढ़ी जाती है। हिंदी राजभाषा से राष्ट्र भाषा और वर्तमान में विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है।

विश्व की दूसरी भाषाओं के परिपेक्ष्य में कहें तो विश्व स्तर पर लगभग 615 मिलियन से अधिक व्यक्ति वर्तमान में हिंदी बोलने में सक्षम हैं, जबकि चीनी जानने वाले 1300 मिलियन हैं, जिसके आधार पर कह सकते हैं कि हिंदी विश्व की दूसरी बड़ी भाषा है। वर्तमान में हिंदी के सामान्य शब्दों की संख्या 1.5 लाख के लगभग है और दिन प्रतिदिन हिंदी के शब्दों की संख्या बढ़ती जा रही है। हिंदी शब्द समूह अन्य प्रादेशिक भाषाओं के शब्दों को स्वयं में समावेश करते हुए निरंतर नए शब्द समुच्य से समृद्ध होकर और अधिक विस्तृत होता जा रहा है। प्रादेशिक लोक पर्व छट पूरे देश में मनाया जाता है यह लोक संस्कृतियों के विस्तार का सामाजिक ढांचा है, जो हिंदी के माध्यम से राष्ट्र के कोने–कोने

तक लोगों में आस्था का संचार स्थापित करने में साकार हुआ, इसका श्रेय भी हिंदी को ही जाता है। यह सब भारत की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के सहयोग, आपसी तालमेल और सामंजस्य के कारण साकार हुआ है।

भारत वर्ष के अंतर्गत भिन्न–भिन्न प्रांतों की संस्कृतियां और भाषाएं दोनों एक दूसरे की वाहक हैं, कश्मीर से कन्याकुमारी तक और पश्चिमी घाट से लेकर अरुणाचल प्रदेश तक देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी के साथ–साथ अन्य भारतीय भाषाओं का योगदान अत्यंत सराहनीय रहा है। कहने का तात्पर्य है कि स्वाधीनता दिलाने से लेकर स्वभाषा, स्वदेशी, स्वराज तक की यात्रा में हिंदी को परिष्कार, संशोधन और समन्वय की अनेक स्थितियों से होकर गुजरना पड़ा है। मानवीय जीवन मूल्यों के मूल में हिंदी साहित्य एवं हिंदी काव्यधारा ने अन्य भाषाओं के साहित्य को भी विकसित किया है।

हिंदी और प्रादेशिक भाषाओं ने भारतीय सामाजिक ताने–बाने के अंतर्गत विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ने में एक सेतु का निर्माण तो किया ही है अपितु क्षेत्रीय जन–मानस के अतिरिक्त वैश्विक स्तर पर भी भिन्न–भिन्न सामाजिक रीति–रिवाजों, धार्मिक क्रिया–कलापों तथा रहन–सहन की जानकारी से एक–दूसरे को रुबरु करवाने में सफल हुई है, जो कि सभी भारतीय क्षेत्रीय भाषाओं के सहयोग से ही संभव हो सका है। जनमानस की सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक विचारधाराओं के आदान–प्रदान को परिचालित करने के ऐतिहासिक कार्य को हिंदी ने अन्य भाषाओं की मदद से बड़ी सहजता एवं सरलता से पूर्ण किया। अतीत के कड़वे अनुभवों को देखें तो विदेशी आक्रांताओं के द्वारा भारत की सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक एकता के साथ–साथ भारतीय संस्कृतियों को भी समय–समय पर खंडित किया जाता रहा, जिसको हिंदी ने अन्य भाषाओं के साथ सामंजस्य बैठाकर अपने मधुर स्वाभाविक गुणों से एकीकृत करके समूचे राष्ट्र के जन–मानस में सांस्कृतिक विस्तार को विस्तृत और संचारित करने का महान कार्य किया।

यह कहना अत्यंत आवश्यक होगा कि भारतीय सभ्यता एवं सांस्कृतिक विस्तार को कायम रखने के लिए भारतीय जन चेतना को देश में ही नहीं अपितु वैश्विक स्तर पर जाग्रत करने की दिशा में कदम बढ़ाने होंगे। हिंदी के विद्वानों, हिंदी कवि–कवयित्रियों, कहानीकारों, लेखकों, गीतकारों तथा हिंदी के महान दार्शनिक विचारकों को सांस्कृतिक विस्तार की इस धरोहर को और अधिक विस्तृत करने एवं जीवंत रखने के लिए जन–जन को जागरूक करके प्रेरित करने की दिशा में अधिक प्रयास करने की आवश्यकता होगी। किन्तु इस सच को भी नहीं झुठलाया जा सकता कि वर्तमान में हिंदी का वर्चस्व और विस्तार में निरंतर बढ़ोत्तरी होती जा रही है, जिसमें अन्य भारतीय भाषाओं ने कदम–कदम पर हिंदी के साथ तालमेल बैठाकर सहयोग प्रदान किया है। हिंदीभाषी क्षेत्र ही नहीं अपितु गैर हिंदीभाषी क्षेत्र अर्थात दक्षिण भारत के अतिरिक्त वैश्विक स्तर पर भी जन–मानस बड़ी दिलचस्पी से हिंदी बोलने और समझने का प्रयास करते हैं। देश में व्यापारिक आदान–प्रदान की व्यावहारिक प्रक्रियाओं में भी अन्य भारतीय भाषाओं के साथ–साथ हिंदी का प्रयोग बढ़–चढ़ कर हो रहा है।

हिंदी के साथ–साथ प्रादेशिक भाषाओं का साहित्य, वाचिक परंपरा, कला, सिनेमा, नृत्य, ड्रामा, गीत–संगीत, सामाजिक परिवेश, विचारधारा, जीवन–शैली इत्यादि हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से भिन्न–भिन्न क्षेत्रों की जानकारियां बड़े स्तर पर भारतीय जन मानस तक पहुंचाकर सांस्कृतिक विस्तार को एक नया आयाम देकर स्थापित किया जा सकता है।

हिंदी पत्रकारिता की 200 वर्षों की यात्राः "उदंत मार्तंड" से डिजिटल युग तक

लेख

डॉ. प्रभात कुमार
सहायक प्रबंधक (जनसंपर्क), खुर्जा

हिंदी पत्रकारिता इस वर्ष लगभग दो सौ वर्षों की यात्रा को सफलतापूर्वक पूर्ण कर रही है। 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में अपनी मामूली शुरुआत से लेकर आज प्रिंट, टेलीविजन और डिजिटल प्लेटफार्मों पर अपनी गतिशील उपस्थिति तक, हिंदी पत्रकारिता ने जनमत बनाने, राष्ट्रीय चेतना जगाने और लोकतंत्र को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत में हिंदी पत्रकारिता का प्रारंभिक इतिहास 19वीं शताब्दी में 30 मई, 1826 को कलकत्ता से पंडित जुगल किशोर शुक्ल द्वारा 'उदंत मार्तंड' के प्रकाशन के साथ शुरू हुआ। यह पहला हिंदी साप्ताहिक समाचार पत्र था जिसका उद्देश्य उन हिंदी भाषी पाठकों की सेवा करना था, जिनकी अपनी भाषा में समाचारों तक पहुंच नहीं थी। अपनी अग्रणी भूमिका के बावजूद, अखबार को वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और 1827 में यह बंद हो गया। इस ऐतिहासिक शुरुआत के कारण, भारत में हर साल 30 मई को हिंदी पत्रकारिता दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसके बाद, बनारस अखबार (1845), बुद्धि प्रकाश (1852) और समाचार सुधा वर्षण (1854) सहित कई शुरुआती हिंदी प्रकाशन सामने आए, जिन्होंने सामाजिक जागरूकता और शैक्षिक सुधार में योगदान दिया।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हिंदी पत्रकारिता का क्रमिक विस्तार हुआ। सुधाकर और हिंदुस्तान जैसे समाचार पत्र बढ़ते पाठक वर्ग की जरूरतों को पूरा करने के लिए उभरे। इस काल में भारतेंदु हरिश्चंद्र जैसे साहित्यिक दिग्गजों का प्रभाव भी देखा गया, जिन्होंने न केवल एक लेखक के रूप में योगदान दिया, बल्कि पत्रकारिता को सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय जागरण के उपकरण के रूप में भी इस्तेमाल किया। कवि वचन सुधा, हरिश्चंद्र मैगजीन और बालबोधिनी (1874 में शुरू की गई महिलाओं की मासिक पत्रिका) जैसे अपने प्रकाशनों के माध्यम से उन्होंने सामाजिक असमानता, सांस्कृतिक पहचान और औपनिवेशिक शोषण जैसे मुद्दों को उठाया। अन्य उल्लेखनीय योगदानकर्ताओं में हिंदी प्रदीप (1877) के संपादक बालकृष्ण भट्ट और प्रताप नारायण मिश्र शामिल थे।

20वीं शताब्दी की शुरुआत हिंदी पत्रकारिता में एक परिवर्तनकारी चरण था, जिसकी विशेषता साहित्यिक विकास और बढ़ती राष्ट्रीय चेतना थी। एक बड़ा मील का पत्थर 1900 में इलाहाबाद से 'सरस्वती' का शुभारंभ था, जिसका संपादन 1903 से 1920 तक महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किया था। उनके नेतृत्व में, सरस्वती सामाजिक सुधार, साहित्य और राष्ट्रीय जागरण का एक शक्तिशाली मंच बन गई। मैथिलीशरण गुप्त, प्रेमचंद और महादेवी वर्मा जैसे लेखकों ने इस पत्रिका में योगदान दिया, जिससे आधुनिक हिंदी गद्य और पत्रकारिता को आकार मिला।

एक और महत्वपूर्ण विकास राष्ट्रवादी समाचार पत्रों का उदय था जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का सक्रिय समर्थन किया। 1878 का वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट, जिसे अक्सर "गैगिंग एक्ट" (मुंह बंद करने वाला कानून) कहा जाता था, विशेष रूप से भारतीय भाषाओं के इन समाचार पत्रों को चुप कराने के लिए बनाया गया था जो ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों के आलोचक थे। इस कारण संपादकों और पत्रकारों को अक्सर अपने काम के लिए सेंसरशिप, कारावास और वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। किंतु भारत के स्वतंत्रता सेनानियों ने पत्रकारिता के माध्यम से निर्भीकता के साथ ब्रिटिश सरकार की काली करतूतों को उजागर करने का काम जारी रखा। इसी कालखंड में पंडित मदन मोहन मालवीय ने 1907 में इलाहाबाद से अभ्युदय एवं वर्ष 1936 में हिंदुस्तान अखबार की शुरुआत की। गणेश शंकर विद्यार्थी ने 1913 में कानपुर से प्रताप की नींव रखी और शिव प्रसाद गुप्त ने 1920 में वाराणसी से आज की शुरुआत की। माखनलाल चतुर्वेदी ने 'प्रभा (1913)' और 'कर्मवीर (1920)' जैसे पत्रों के संपादन के माध्यम से हिंदी पत्रकारिता को राष्ट्रीय जागरण और स्वाधीनता संग्राम का सशक्त हथियार बनाया। इन सभी राष्ट्रवादी समाचार पत्रों ने राजनीतिक जागरूकता को प्रोत्साहित किया और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जनमत को लामबंद किया। उनकी निर्भीक लेखनी ने न केवल ब्रिटिश शासन की नींव हिला दी, बल्कि पत्रकारों की एक ऐसी पीढ़ी तैयार की जो नैतिक मूल्यों और राष्ट्रभक्ति के लिए समर्पित थी।

1947 में स्वतंत्रता के बाद, हिंदी पत्रकारिता ने विस्तार और संस्थागत विकास के चरण में प्रवेश किया। साक्षरता दर में सुधार और हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में प्रमुखता मिलने के साथ हिंदी समाचार पत्रों की मांग बढ़ गई। इस युग में दैनिक जागरण (कानपुर 1947), दैनिक भास्कर (भोपाल 1958), अमर उजाला (आगरा 1948), नवभारत टाइम्स (मुंबई 1950), नई दुनिया (इंदौर 1947), राजस्थान पत्रिका (जयपुर 1956), पंजाब केसरी (जालंधर 1966), जनसत्ता (दिल्ली 1983) और राष्ट्रीय सहारा (दिल्ली 1998) जैसे कई महत्वपूर्ण समाचार पत्र प्रभावशाली आवाजों के रूप में उभरे।

स्वतंत्रता के बाद की अवधि में धर्मयुग (1949), साप्ताहिक हिंदुस्तान (1950), और दिनमान (1965) सहित कई ऐतिहासिक हिंदी पत्रिकाओं का उदय हुआ। आधुनिक हिंदी पत्रकारिता को अज्ञेय, धर्मवीर भारती और रघुवीर सहाय जैसे प्रतिष्ठित लेखकों और संपादकों के साथ–साथ राजेंद्र माथुर, प्रभाष जोशी, शरद जोशी और कर्पूर चंद्र 'कुलिश' जैसी प्रभावशाली हस्तियों ने आकार दिया। आपातकाल (1975–77) की घोषणा ने हिंदी पत्रकारिता के सामने एक बड़ी चुनौती पेश की। आपातकाल (1975–77) के दौरान हिंदी पत्रकारिता ने प्रेस सेंसरशिप के कड़े प्रहार झेले, जहाँ कई समाचार पत्रों को सरकारी अनुमति के बिना छपने की मनाही थी। इस कठिन दौर में 'जनसत्ता' और 'नई दुनिया' जैसे प्रकाशनों ने असहमति व्यक्त करने के लिए साहसी रुख अपनाया और संपादकीय पन्ने खाली छोड़कर या प्रतीकात्मक विरोध के जरिए लोकतंत्र की आवाज को जीवित रखा। इस कालखंड ने हिंदी पत्रकारिता को सत्ता के प्रति सतर्क और अधिक परिपक्व बनाया।

इस दशक में हिंदी पत्रकारिता ने तकनीकी नवाचार और 'हाइपर–लोकल' (जिला संस्करणों) के विस्तार के माध्यम से ग्रामीण और अर्ध–शहरी बाजारों में अपनी गहरी पैठ बनाई। इस दौरान उदारीकरण और निजी विज्ञापनों की बाढ़ ने हिंदी प्रेस को एक बड़ी आर्थिक शक्ति के रूप में स्थापित किया, जिससे पत्रकारिता एक मिशन के साथ–साथ एक प्रतिस्पर्धी उद्योग में बदल गई। इस कालखंड में बेहतर विजुअल डिजाइन और क्षेत्रीय मुद्दों को प्रमुखता मिलने से पाठकों की संख्या में ऐतिहासिक वृद्धि दर्ज की गई। 20वीं सदी के अंत और 21वीं सदी की शुरुआत में आज तक, जी न्यूज और एनडीटीवी इंडिया जैसे चैनलों के साथ हिंदी टेलीविजन पत्रकारिता का उदय हुआ। इन चैनलों ने समाचारों को त्वरित, दृश्यात्मक और जनसामान्य की भाषा में प्रस्तुत कर पत्रकारिता को घर–घर तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लाइव रिपोर्टिंग, स्टूडियो डिबेट, चुनाव विश्लेषण और विशेष कार्यक्रमों के माध्यम से हिंदी टीवी पत्रकारिता ने जनमत निर्माण, राजनीतिक जागरूकता और सामाजिक विमर्श को नई दिशा प्रदान की।

21वीं सदी में डिजिटल मीडिया ने हिंदी पत्रकारिता को नई गति, व्यापकता और वैश्विक पहुँच प्रदान की है। समाचार वेबसाइटों, मोबाइल एप्स, यूट्यूब चैनलों और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से हिंदी पत्रकारिता अब हर वर्ग और हर क्षेत्र तक तुरंत पहुँच रही है। यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम और एक्स (ट्विटर) जैसे प्लेटफॉर्म आज समाचार प्रसार के प्रमुख माध्यम बन गए हैं। डिजिटल तकनीक के विकास ने हिंदी पत्रकारिता को अधिक संवादात्मक, प्रभावशाली और जनभागीदारी आधारित माध्यम के रूप में स्थापित किया है। हालाँकि, इसने फर्जी खबरें (फेक न्यूज) और गलत सूचनाओं जैसी चुनौतियां भी पैदा की हैं, जिससे 'फैक्ट–चेकिंग' (तथ्यों की जांच) पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

अपनी 200 साल की यात्रा के दौरान, हिंदी पत्रकारिता ने राष्ट्र–निर्माण, सामाजिक सुधार और लोकतंत्र के सजग प्रहरी के रूप में कई भूमिकाएं निभाई हैं। वर्तमान में, हिंदी पत्रकारिता के सामने पेड न्यूज, विज्ञापन पर अत्यधिक निर्भरता, संपादकीय स्वतंत्रता से समझौता और राजनीतिक दबाव जैसी गंभीर चुनौतियां हैं। इन चुनौतियों के कारण पत्रकारिता की निष्पक्षता, विश्वसनीयता और जनहितकारी भूमिका पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। बदलते मीडिया परिदृश्य में लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए स्वतंत्र, नैतिक और उत्तरदायी पत्रकारिता की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। अतः भविष्य की राह नवाचार को अपनाने और नैतिक मानकों को बनाए रखने में निहित है। 'उदंत मार्तंड' की साधारण शुरुआत से लेकर तेज–तर्रार डिजिटल युग तक, हिंदी पत्रकारिता अपने पाठकों की बदलती जरूरतों के अनुसार लगातार विकसित हुई है। जैसे ही यह अपनी तीसरी शताब्दी में प्रवेश कर रही है, इसे सत्य, अखंडता और जनसेवा के अपने मूल मूल्यों पर टिके रहते हुए डिजिटल युग की नई तकनीकों के साथ कदम मिलाकर चलना होगा।

माँ का पल्लू

निबंध

मदन सिंह चौहान
उप प्रबंधक (विद्युत विभाग), कोटेश्वर

गुरुजी ने कहा कि मां के पल्लू पर निबंध लिखो..तो लिखने वाले छात्र ने क्या खूब लिखा.....

आदरणीय गुरुजी...माँ के पल्लू का सिद्धाँत माँ को गरिमामयी छवि प्रदान करने के लिए था। इसके साथ ही ... यह गरम बर्तन को चूल्हे से हटाते समय गरम बर्तन को पकड़ने के काम भी आता था। पल्लू की बात ही निराली थी। पल्लू पर तो बहुत कुछ लिखा जा सकता है। पल्लू ... बच्चों का पसीना, आँसू पोंछने, गंदे कान, मुँह की सफाई के लिए भी इस्तेमाल किया जाता था। माँ इसको अपना हाथ पोंछने के लिए तौलिये के रूप में भी इस्तेमाल कर लेती थी। खाना खाने के बाद, पल्लू से मुँह साफ करने का, अपना ही आनंद होता था। कभी आँख में दर्द होने पर... माँ अपने पल्लू को गोल बनाकर, फूँक मारकर, गरम करके आँख में लगा देती थी, दर्द उसी समय गायब हो जाता था। माँ की गोद में सोने वाले बच्चों के लिए उसकी गोद गद्दा और उसका पल्लू चादर का काम करता था। जब भी कोई अंजान घर पर आता तो बच्चा उसको माँ के पल्लू की ओट लेकर देखता था। जब भी बच्चे को किसी बात पर शर्म आती, वो पल्लू से अपना मुँह ढककर छुप जाता था। जब बच्चों को बाहर जाना होता, तब 'माँ का पल्लू' एक मार्गदर्शक का काम करता था। जब तक बच्चे ने हाथ में पल्लू थाम रखा होता, तो सारी कायनात उसकी मुट्ठी में होती थी। जब मौसम ठंडा होता था... माँ उसको अपने चारों ओर लपेटकर ठंड से बचाने की कोशिश करती और जब बारिश होती तो, माँ अपने पल्लू में ढाँक लेती। पल्लू का उपयोग पेड़ों से गिरने वाले मीठे जामुन और सुगंधित फूलों को लाने के लिए भी किया जाता था। पल्लू घर में रखे सामान से, धूल हटाने में भी बहुत सहायक होता था। कभी कोई वस्तु खो जाए, तो एकदम से पल्लू में गांठ लगाकर निश्चिंत हो जाना कि जल्द मिल जाएगी। पल्लू में गाँठ लगाकर माँ एक चलता फिरता बैंक या तिजोरी रखती थी और अगर सब कुछ ठीक रहा तो कभी–कभी उस बैंक से कुछ पैसे भी मिल जाते थे। "मुझे नहीं लगता कि विज्ञान पल्लू का विकल्प ढूँढ पाया है!"

"मां का पल्लू कुछ और नहीं, बल्कि एक जादुई एहसास है"! स्नेह और संबंध रखने वाले अपनी माँ के इस प्यार और स्नेह को हमेशा महसूस करते हैं, जो कि आज की पीढ़ियों की समझ में आता ही नहीं........"अब जीन्स पहनने वाली माएं, पल्लू कहाँ से लाएंगी" पता नहीं....!! कड़वा है पर सच्चाई यही है।

"उद्‍यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।"

— **हितोपदेश**

अर्थः यत्न, यानि कि मेहनत से कार्य पूर्ण होते हैं। सिर्फ इच्छाशक्ति से नहीं। जैसे सोते हुए सिंह के मुख में मृग स्वयं प्रविष्ट नहीं हो जाता, अपितु सिंह को स्वयं उसका शिकार करना पड़ता है।

पूंजीगत व्यय (कैपेक्स) और राष्ट्र निर्माण में इसकी भूमिका

लेख

राघवेंद्र कुमार श्रीवास्तव
प्रबंधक (एम.पी.एस.), ऋषिकेश

वर्तमान वैश्विक और राष्ट्रीय आर्थिक परिदृश्य में विकास, औद्योगिकीकरण तथा अवसंरचना निर्माण की गति को तेज करने के लिए पूंजीगत निवेश की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। किसी भी देश की आर्थिक मजबूती केवल उसके वर्तमान उत्पादन पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि वह भविष्य के लिए कितनी प्रभावी योजना बनाता है और उसमें कितना निवेश करता है। इसी संदर्भ में कैपेक्स, अर्थात् पूंजीगत व्यय, एक अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणा के रूप में उभरकर सामने आता है। यह न केवल संगठनों की प्रगति का आधार है, बल्कि पूरे राष्ट्र के आर्थिक विकास की दिशा भी निर्धारित करता है।

कैपेक्स का सामान्य अर्थ उन व्ययों से है जो किसी संस्था, कंपनी या सरकार द्वारा दीर्घकालिक परिसंपत्तियों के निर्माण, अधिग्रहण, उन्नयन अथवा विस्तार के लिए किए जाते हैं। इन परिसंपत्तियों में भवन, मशीनरी, उपकरण, सड़कें, पुल, बिजली परियोजनाएं, डिजिटल अवसंरचना आदि शामिल होते हैं। यह व्यय सामान्य दैनिक खर्चों से भिन्न होता है क्योंकि इसका उद्देश्य तत्काल लाभ अर्जित करना नहीं, बल्कि भविष्य में आय और उत्पादन क्षमता को बढ़ाना होता है।

कैपेक्स की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह दीर्घकालिक निवेश होता है। इसमें एक बार में बड़ी राशि खर्च की जाती है, लेकिन इसका लाभ कई वर्षों तक प्राप्त होता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई कंपनी नया प्लांट स्थापित करती है या आधुनिक मशीनरी खरीदती है तो इससे उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है और दीर्घकाल में अधिक लाभ अर्जित किया जा सकता है। इसी प्रकार सरकार द्वारा सड़कों, रेल नेटवर्क, स्वास्थ्य सुविधाओं और शिक्षा संस्थानों में किया गया निवेश भी देश के भविष्य को सुदृढ़ बनाता है।

कैपेक्स का महत्व केवल संगठनात्मक स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यापक रूप से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है। जब सरकार पूंजीगत व्यय बढ़ाती है, तो इसका सीधा प्रभाव आर्थिक गतिविधियों पर पड़ता है। नई परियोजनाओं के शुरू होने से रोजगार के अवसर बढ़ते हैं, उद्योगों को गति मिलती है और उत्पादन में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त, कैपेक्स का एक "मल्टीप्लायर प्रभाव" भी होता है, जिसके कारण एक क्षेत्र में किया गया निवेश अन्य क्षेत्रों में भी आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देता है। उदाहरण के लिए, यदि सरकार एक राजमार्ग बनाती है, तो इससे परिवहन लागत कम होती है, व्यापार में वृद्धि होती है और आसपास के क्षेत्रों का विकास होता है।

भारत जैसे विकासशील देश में कैपेक्स का महत्व और भी अधिक है। हाल के वर्षों में सरकार ने अवसंरचना विकास को प्राथमिकता देते हुए पूंजीगत व्यय में निरंतर वृद्धि की है। यह वृद्धि न केवल आर्थिक विकास को गति देने के लिए आवश्यक है, बल्कि वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारत की स्थिति को मजबूत करने के लिए भी महत्वपूर्ण है।

बड़े पैमाने पर किए जा रहे निवेश से निजी क्षेत्र को भी प्रेरणा मिलती है और वह भी निवेश बढ़ाने के लिए आगे आता है।

कैपेक्स व्यय और ओपेक्स व्यय के बीच अंतर को समझना भी आवश्यक है। जहां कैपेक्स दीर्घकालिक परिसंपत्तियों के निर्माण पर केंद्रित होता है, वहीं ओपेक्स दैनिक संचालन से जुड़े खर्चों जैसे वेतन, बिजली बिल, कच्चा माल आदि पर किया जाता है। कैपेक्स भविष्य की वृद्धि का आधार तैयार करता है, जबकि ओपेक्स वर्तमान संचालन को बनाए रखने के लिए आवश्यक होता है। इस प्रकार, दोनों के बीच संतुलन बनाए रखना किसी भी संगठन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

हालांकि कैपेक्स के अनेक लाभ हैं, लेकिन इसके साथ कई चुनौतियां भी जुड़ी होती हैं। सबसे पहली चुनौती उच्च प्रारंभिक निवेश की होती है। इसके अलावा परियोजनाओं में देरी, लागत में वृद्धि, तकनीकी बाधाएं और नियामक अनुमोदनों में विलंब जैसी समस्याएं भी सामने आती हैं। यदि इन चुनौतियों का समय पर समाधान न किया जाए, तो परियोजनाएं अपेक्षित परिणाम नहीं दे पाती और निवेश का पूरा लाभ प्राप्त नहीं हो पाता।

इसीलिए कैपेक्स के प्रभावी प्रबंधन का विशेष महत्व है। इसके लिए आवश्यक है कि परियोजनाओं की योजना सटीक और यथार्थवादी हो, संसाधनों का उचित आबंटन किया जाए और समय–समय पर प्रगति की समीक्षा की जाए। आधुनिक प्रबंधन तकनीकों जैसे परियोजना प्रबंधन सॉफ्टवेयर, डेटा विश्लेषण और जोखिम प्रबंधन उपकरणों का उपयोग करके कैपेक्स के कार्यान्वयन को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

कैपेक्स का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह तकनीकी प्रगति को भी बढ़ावा देता है। जब कंपनियां नई तकनीकों में निवेश करती हैं, तो उनकी उत्पादकता बढ़ती है और वे बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त हासिल करती हैं। इसी प्रकार अनुसंधान एवं विकास में किया गया निवेश देश को तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर बनाने में सहायक होता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि कैपेक्स किसी भी देश या संगठन के आर्थिक विकास की रीढ़ है। यह न केवल वर्तमान आर्थिक गतिविधियों को सुदृढ़ करता है, बल्कि भविष्य के विकास की मजबूत नींव भी रखता है। यदि कैपेक्स को सही रणनीति, प्रभावी प्रबंधन और समयबद्ध क्रियान्वयन के साथ लागू किया जाए, तो यह दीर्घकालिक समृद्धि, रोजगार सृजन और आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित कर सकता है। इसलिए, आज के प्रतिस्पर्धात्मक और गतिशील आर्थिक वातावरण में कैपेक्स का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है और इसे विकास के एक प्रमुख साधन के रूप में देखा जाना चाहिए।

"उद्योगिनं पुरुषसिंहं उपैति लक्ष्मीः दैवं हि दैवमिति कापुरुषा वदंति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषं आत्मशक्त्या यत्ने कृते यदि न सिध्यति न कोऽत्र दोषः।"

– संस्कृत सुभाषित (लोकप्रचलित)

अर्थः "लक्ष्मी (सफलता और समृद्धि) साहसी, परिश्रमी और कर्मठ व्यक्ति के पास ही आती है। केवल भाग्य पर निर्भर रहना कायरता का लक्षण है। मनुष्य को अपनी पूरी शक्ति से प्रयास करना चाहिए। यदि प्रयास करने के बाद भी सफलता न मिले, तो इसमें किसी का क्या दोष है।

हिंदी पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा (एआई) तक

निबंध

हरीश चन्द्र उपाध्याय
उप महाप्रबंधक
भू–विज्ञान एवं भू–तकनीकी विभाग, ऋषिकेश

मयाऽध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्।
प्रकृति मेरी अध्यक्षता में सम्पूर्ण चराचर जगत रचती है।
हे कुंतीनन्दन ! इसी हेतु से जगत में विविध परिवर्तन होते हैं।

परिवर्तन हमेशा विकास नहीं ला सकता, लेकिन परिवर्तन के बिना कोई विकास नहीं हो सकता है। हमारे जीवन में दिनों दिन परिवर्तन होता रहता है जिसमें कभी मौसम का, कभी तकनीक का व कभी नियमावली का परिवर्तन शामिल है। कहा जाता है कि यदि हमें अपने जीवन में कुछ नया करना है तो स्वयं को कंफर्ट जोन से बाहर निकालकर अपनी जीवनशैली में परिवर्तन करना पड़ेगा। यदि देश की प्रगति की बात की जाये तो भी हर क्षेत्र में तकनीक तथा सिस्टम में परिवर्तन अनिवार्य है । आज देखें तो भारत ने इलेक्ट्रॉनिक क्षेत्र में, ईंधन के विकास में, यातायात आदि संसाधनों में काफी परिवर्तन किया है। पिछले कुछ दशकों में डिजिटल तकनीक के क्षेत्र में कई तरह के बड़े बदलाव हुए हैं। आज चैट जीपीटी व अन्य ऐप के प्रयोग से परिवर्तन को और भी गति मिल रही है । 15–17 फरवरी, 2023 को फिजी में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन में "हिन्दी पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा तक चर्चा का एक मुख्य विषय था" हिन्दी को पारंपरिक प्रयोजनों से अधिक आधुनिक प्रयोजनों के लिए तैयार कराना ही भाषिक आधुनिकीकरण है। आज हिंदी बाजार और प्रौद्योगिकी के साथ अपने को सशक्त करते हुए कृत्रिम मेधा की भाषा बनने की ओर अग्रसर है।

भारत का एआई विजन और मिशन :–

इंडिया एआई मिशन देश का प्रमुख कार्यक्रम है, जिसका लक्ष्य भारत को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की वैश्विक शक्ति बनाना है। जुलाई, 2024 में पहली बार एआई को अलग बजट मिला था, जिसमें ₹551.75 करोड़ का आबंटन किया गया। इससे पहले तक एआई के लिए अलग से कोई फंड नहीं था और इसे तकनीकी विकास की बड़ी योजनाओं में शामिल किया जाता था। 29 जनवरी को जारी आर्थिक सर्वेक्षण में सरकार ने चिंता जताई थी कि दुनिया में एआई की ताकत कुछ ही कंपनियों तक सीमित है। रिपोर्ट में कहा गया कि इस अंतर को सार्वजनिक फंडिंग से पाटना बेहद महंगा होगा। इसके बावजूद भारत ने रणनीतिक दृष्टि से एआई में निवेश को प्राथमिकता दी है, क्योंकि यह रक्षा, सुरक्षा और व्यापार के लिए निर्णायक तकनीक बन चुकी है।

ग्लोबल कंटेक्स्ट

नवंबर, 2025 में भारत ने अपना पहला ए आई सुशासन दिशा–निर्देश जारी किया है। इसी तरह अमेरिका और चीन ने भी पिछले साल अपने–अपने फ्रेमवर्क लागू किए। इससे साफ है कि दुनिया भर में एआई को लेकर प्रतिस्पर्धा तेज हो चुकी है और भारत इस दौड़ में पीछे नहीं रहना चाहता। आदित्य इंफोटेक लिमिटेड (सीपी प्लस) के मैनेजिंग डायरेक्टर आदित्य खेमका ने कहा कि सरकार का यह कदम प्रयोग से आगे बढ़कर वास्तविक और मिशन–क्रिटिकल उपयोग की दिशा में है। उनके अनुसार, जैसे–जैसे एआई सार्वजनिक सुरक्षा, निगरानी और स्मार्ट इंफ्रास्ट्रक्चर का हिस्सा बन रहा है, यह बजट सुरक्षित और जिम्मेदारी अपनाने की नींव रखता है।

एआई को उद्योग, सुरक्षा और समाज तक पहुंचाना

2018 में पहली बार बजट भाषण में एआई का उल्लेख हुआ था। तब यह केवल एक विचार था, लेकिन अब यह भारत की रणनीतिक प्राथमिकता बन चुका है। ₹1,000 करोड़ का यह आबंटन दिखाता है कि सरकार एआई को केवल शोध

तक सीमित नहीं रखना चाहती, बल्कि इसे उद्योग, सुरक्षा और समाज के लिए वास्तविक समाधान बनाने की दिशा में आगे बढ़ रही है।

पारंपरिक ज्ञानः– विभिन्न स्थानीय समुदायों के अधिकार वाला वह ज्ञान है जो उन्होंने पारंपरिक एवं वर्तमान गतिविधियों के माध्यम से संचित किया है। किसी समुदाय तथा उसकी सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के स्थानीय पर्यावरण के साथ जुड़े हुए संबंध इस ज्ञान के आधार होते हैं। पारंपरिक ज्ञान स्वदेशी लोगों की बौद्धिक संपदा है जो पीढ़ियों से चली आ रही है और उनके अस्तित्व का अभिन्न अंग है। यह उनकी सांस्कृतिक विरासत, रीति–रिवाजों, विश्वासों और ज्ञान प्रणालियों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में लाती है। इन जन्मों के लिए, ज्ञान उनके जीवन का एक गहरा हिस्सा है। पारंपरिक ज्ञान आधारित औषधीय विकास कार्यक्रम चयनित पारंपरिक हर्बल पौधों/सूत्रीकरण के मान्य कारणों पर ध्यान केंद्रित करता है जिन्हें हमारी लोक कथाओं में चुनिंदा रूप से पारंपरिक हीलर/आरोग्य आदि के तौर पर संरक्षित किया गया है। प्राचीन काल से ही विभिन्न रोगों के इलाज के लिए लोक–कथाओं की दवा में पौधों के विभिन्न भागों का उपयोग तथा उनके लाभकारी औषधीय गुणों के लिए सेवन किया जाता रहा है। आज के दौर में, ये प्राकृतिक उत्पाद दवा बनाने का एक महत्वपूर्ण स्रोत साबित हुए है। औषधि के ऐसे प्रकार जिनसे पारंपरिक चीनी चिकित्सा, आयुर्वेद, कम्पो, पारंपरिक कोरियाई चिकित्सा तथा यूनानी प्राकृतिक उत्पादों का प्रयोग सैकड़ों या हजारों वर्षों से दुनियाभर में प्रचलित है और चिकित्सा की क्रमबद्ध विनियमित प्रणालियों में उभरकर आए है। भारत का पारंपरिक ज्ञान विभिन्न रूपों में उपलब्ध है जैसे कि शास्त्रीय ग्रंथ, पांडुलिपियां और/या मौखिक संचार के रूप में जो कि हजारों वर्षों से चला आ रहा है। यह बहुमूल्य ज्ञान अकसर हमारे दैनिक क्रिया–कलापों का भी हिस्सा है। कुछ पारंपरिक पद्धतियों से संबंधित ज्ञान धारकों की आजीविका के साधन हैं। प्राकृत, अपभ्रंश ब्रज, अवधी भोजपुरी से लेकर खड़ी बोली तक हिंदी ने एक लंबी यात्रा तय की। फोर्ट विलियम कॉलेज के आचार्यों ने खड़ी बोली को आरंभिक स्वरूप में ढाला तो आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के कड़े अनुशासन ने मानक कसौटी पर कसा। छायावाद आंदोलन के दौरान हिंदी में श्रेष्ठ उच्च स्तरीय साहित्य का सृजन हुआ। सुपरिचित शब्दावली, शब्द–संपदा की दृष्टि से भी हिंदी विश्व की उन्नत भाषाओं के समतुल्य हो गई।

चीनी यात्री फाह्यान में जब पाटलिपुत्र के भवन देखे तो सोचा कि ये मनुष्यों के नहीं देवों के बनाए हुए हैं । कितनी उन्नत कला, संस्कृति रही होगी । पाटलिपुत्र, काशी, मथुरा उज्जैन, आबू प्राचीन नगर हैं । मगध से मालवा और आबू तक समूचे प्रदेश में हिंदी (तत्कालीन बोलियों) का व्यवहार होता था । इस विशाल हिंदी प्रदेश से कबीर, सूर, मीरा, तुलसी, विद्यापति आए । इससे पूर्व तुर्कों ने यूनान पर अधिकार तो किया लेकिन वे कभी यूनानी सभ्यता के अंग नहीं बन पाए । यूनान की अपेक्षा हिंद का आर्थिक–सांस्कृतिक, भाषाई विकास बढ़ा–चढ़ा था। यहां की समाहार क्षमता के चलते वे अपनी भाषा और अस्मिता खोकर यहां की संस्कृति में विलीन हो गए । भक्ति काल के दौर में हिंदी में विशाल साहित्य की रचना हुई । यहां तक कि जायसी, रसखान, रहीम, कुतुबन, मंझन ने भी हिंदी में कविताएं लिखी ।

कृत्रिम मेधाः– ज्ञान या जानकारी संबंधी मामलों में किसी मशीन के मानवीय दिमाग की तरह काम करने की क्षमता को कृत्रिम मेधा कहा जाता है । मसलन महसूस करने या समझने, तर्कसंगत ढंग से सोचने, सीखने, समस्याओं को हल करने और यहां तक कि रचनात्मकता का इस्तेमाल इसके दायरे में आते हैं । कृत्रिम मेधा को लेकर वैश्विक स्तर पर अलग–अलग राय है । कुछ विद्वान इसे बदलावकारी तकनीक मानते हैं, जो ग्रोथ और उत्पादकता की रफ्तार तेज करेगी, जबकि कुछ अन्य लोगों की राय में इसके नकारात्मक मायने हैं । एआई प्रणालियां विशाल और वृहद मात्रा में डेटा का विश्लेषण कर ज्ञान अर्जित करती हैं और वे परस्पर संवादात्मक डेटा तथा उपयोगकर्ता–प्रतिक्रिया के निरंतर प्रारूपण के माध्यम से अनुकूलित होती रहती हैं । कृत्रिम मेधा ने यह संभव कर दिखाया कि कोई एक भाषा जानने पर भी हम सब भाषा के बीच संवाद एवं अपना कारोबार कर सकते हैं।

सूचना क्रांति के प्रसार युग में कंप्यूटर और इंटरनेट ने मानव जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करना शुरू किया । सूचना और ज्ञान तक पहुंच के अनगिनत रास्ते खुले । इस क्षेत्र में भी जहां एक ओर अंग्रेजी का वर्चस्व था, वहीं अन्य

भाषाओं के सामने चुनौतियां बनी हुई थी । ये चुनौतियां न सिर्फ बदलाव लाने को लेकर थी वरन तकनीक के मापदंडों पर खरे उतरने को लेकर भी बनी हुई थी । भाषिक संरचना, वर्तनी, मात्रा– विन्यास, मानव की–बोर्ड की समस्याएं यथावत् बनी हुई थीं । बड़े परिश्रम और शोध के उपरांत हिंदी वर्ड प्रोसेसर अक्षर (1983) की शुरुआत तो हुई लेकिन ऑनलाइन सामग्री की उपलब्धता अभी भी दूर की बात बनी हुई थी । 1991 में देवनागरी व आठ अन्य भारतीय लिपियों में यूनिकोड टाइपिंग की शुरुआत हुई ।

सूचना क्रांति के युग में ब्लॉगिंग की शुरुआत (1994) निर्णायक साबित हुई । नेट पर सामग्री अपलोड करना आमजन के लिए संभव हुआ । जिमी वेल्स और लैरी सिंगर ने अंग्रेजी विकिपीडिया की शुरुआत की । किसी एक प्लेटफार्म पर क्रमबद्ध सामग्री मिलने की शुरुआत हुई। 2004 में हिंदी विकीपीडिया शुरू हुआ। छिटपुट संख्या में हिंदी में ब्लॉग लिखे गए। उस समय हिंदी को इंटरनेट पर स्थापित करने का जैसा उत्साह संसार भर में दिखाई दिया, हालांकि वह सीमित था लेकिन अभूतपूर्व । ब्लॉग वाणी जैसे ब्लॉग एग्रीगेटर्स ने इस बात का जिम्मा संभाला कि दुनिया भर में हिंदी में एक भी वाक्य अपलोड किया गया हो तो सार्वजनिक स्पेस पर हर किसी के लिए उपलब्ध हो । मैथिलीशरण गुप्त और उनके पुत्र सिरिल गुप्त ने इसमें अग्रणी भूमिका निभाई। आरंभिक ब्लॉग्स कस्बा, मोहल्ला, कबाड़खाना, शब्दों का सफर ने इतनी वैविध्य पूर्ण सामग्री उपलब्ध कराई कि साल भर के अंदर इन ब्लॉग्स की संख्या हजार को पार कर चुकी थी। दो दशक बाद हिंदी ऑनलाइन लेखन से प्रभावित लोगों की संख्या 60 करोड़ से ऊपर हो गई। स्मार्ट फोन में समावेशित ध्वनि आधारित हिंदी के बोर्ड ने इस चमत्कार को अकल्पनीय तेजी से बढ़ाया । हिंदी के बदलते परिदृश्य में बड़ी अर्थव्यवस्था और बड़े बाजार की भूमिका को नजर अंदाज करना सही नहीं होगा। हिंदी आज इंटरनेट पर एक बेहतरीन माध्यम के तौर पर स्थापित हो चुकी है ।

हानि व लाभ :– भारत में जब कम्प्यूटर की शुरुआत हुई, तो उस वक्त देश में सूचना प्रौद्योगिकी के लोगों को कंप्यूटर कि जानकारी नहीं थी और अब यहां काफी बड़ी संख्या में आईटी पेशेवर मौजूद हैं । इसी तरह, कृत्रिम मेधा जैसी अहम बदलाव वाली तकनीक रोजगार के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर उथल – पुथल मचाएगी । नए तरह के कौशल उभर कर सामने आएंगे और इन लोगों को फिर से नए कौशल के साथ लैस करने में सरकार को अहम भूमिका निभानी होगी । विनिर्माण के क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ऑटोमेशन की राह खोल सकता है और लोग कम उत्पादकता वाले रोजगार से उच्च उत्पादकता वाले काम की तरफ बढ़ सकते हैं । कृत्रिम मेधा के साथ हिंदी प्रभावी तरीके से काम करेगी ।

उपसंहार :– कृत्रिम मेधा के महत्व का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वर्ष 2018–19 का अंतरिम बजट पेश करते समय माननीय केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने इसका उल्लेख किया। आज लगभग हर उस क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का जिक्र होता है, जहां किसी काम को स्वचालित रूप से मनुष्य के प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के बिना पूरा किया जा सकता है । कुछ ऐसे क्षेत्रों में जिनमें मनुष्य के काम करने में जोखिम हो सकता है, उनमें कृत्रिम मेधा का इस्तेमाल वरदान सिद्ध हुआ है । लेकिन हर सिक्के के दो पहलू होते हैं और एआई भी इसका अपवाद नहीं है । जहां इसके अनेकानेक लाभ हैं, वहीं इसके कुछ नकारात्मक पक्ष भी हैं।

परिवर्तन आएंगे: कुछ तरह की कार्य भूमिकाएं और रोजगार चलन से बाहर हो जाएंगे, कुछ उद्योगों का मौलिक स्वरूप बदल जाएगा तथा रोजगार प्रारूप और संबंध पुनः परिभाषित हो सकते हैं । अंततः यह कहा जा सकता है कि एआई और एआई आधारित अनुप्रयोगों के विकास पर अंकुश नहीं लगाया जाना चाहिए, लेकिन इसके विकास और उपयोग के विभिन्न स्तरों की निगरानी और विनियमन की व्यवस्था होनी चाहिए । हिंदी का सहयोग हर तरफ से सहायक सिद्ध होगा क्योंकि आज हिंदी ने पूरे विश्व में अपना मुख्य स्थान बना लिया है। इस समय विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी तीसरे स्थान में है ।

भवन धराशायी हो जाता, वो जिसका आधार नहीं।।
भाग्यहीन है वो जिसको, अपनी भाषा से प्यार नहीं।
जिसके मन में हिंद और हिंदी भाषा का सत्कार नहीं ।
उसको हिंदुस्तान में, रहने का अधिकार नहीं ।।

फोटो अच्छी हो या न हो, 'इमेज' अच्छी होनी चाहिए

लेख

आशुतोष कुमार आनंद
उप महाप्रबंधक(मा.सं.), ऋषिकेश

"डिजिटल दौर में असली चमक क्या आपकी 'इमेज' आपकी 'फोटो' से बेहतर है?" आज के डिजिटल युग में हम 'दिखावे' के बाजार में जी रहे हैं। हर हाथ में स्मार्टफोन है और हर फोन में हजारों कीमती तस्वीरें। हम अपनी एक फोटो को 'परफेक्ट' बनाने के लिए घंटों खर्च कर देते हैं, सोशल मीडिया पर एक अच्छी फोटो डालने के लिए हम घंटों मेहनत करते हैं, सही एंगल, बेहतरीन लाइटिंग और न जाने कितने एडिटिंग ऐप्स। लेकिन क्या हम अपनी 'इमेज' यानी अपनी छवि को निखारने में उतना ही वक्त लगाते हैं? किसी ने सच ही कहा है कि "खूबसूरती के इस बाजार में, अंततः सूरत नहीं, सीरत देखी जाती है।"

माँ की नजर और दुनिया का पैमाना– बचपन से हम सुनते आए हैं कि 'Beauty lies in the eyes of the beholder' यानी सुंदरता देखने वाले की आंखों में होती है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण एक माँ है। एक माँ के लिए उसका बच्चा दुनिया में सबसे सुंदर होता है, चाहे वह कैसा भी दिखता हो। माँ को फोटो के 'पिक्सेल' से मतलब नहीं होता, उसे अपने बच्चे के 'अस्तित्व' से प्यार होता है। एक पुरानी कहावत है–"हर चेहरा उसकी माँ को प्यारा होता है।" माँ के लिए सुंदरता का अर्थ गोरा रंग या तीखे नैन–नक्श नहीं, बल्कि वह ममता और जुड़ाव है जो वह अपने बच्चे में देखती है। माँ की आँखों में 'ब्यूटी' (सुंदरता) स्थिर होती है क्योंकि वह 'सूरत' से परे 'सीरत' को प्यार करती है। लेकिन जैसे ही हम घर की दहलीज पार करते हैं, दुनिया हमें हमारी 'इमेज' से पहचानती है। यहाँ फोटो की चमक फीकी पड़ जाती है और आपके व्यक्तित्व की सुगंध काम आती है। यदि केवल सुंदर चेहरा ही सब कुछ होता, तो आज दुनिया के महानतम लोगों की सूची में सिर्फ फिल्म स्टार्स और मॉडल्स के नाम होते, वैज्ञानिकों, समाजसेवकों और गुरुओं के नहीं।

सूरत बनाम सीरत – अक्सर लोग 'सुंदरता' और 'छवि' के बीच भ्रमित हो जाते हैं। सूरत वह है जो हमें प्रकृति से मिली है। यह समय के साथ ढल जाएगी। झुर्रियां आएँगी, रंग फीका पड़ेगा और फोटो पुरानी हो जाएगी। सीरत (कैरेक्टर) वह है जिसे हम खुद बनाते हैं। हमारे कर्म, हमारी ईमानदारी और हमारा व्यवहार हमारी सीरत तय करते हैं। एक फोटो सिर्फ एक पल को कैद करती है, लेकिन आपकी 'इमेज' आपके पूरे चरित्र का आईना होती है।

फोटो को बदला जा सकता है, एडिट किया जा सकता है। इमेज को सिर्फ कमाया जा सकता है, यह आपके व्यवहार और ईमानदारी से बनती है। कल्पना कीजिए, एक व्यक्ति है जिसका चेहरा चांद सा सुंदर है, लेकिन उसका व्यवहार कड़वा है और वह दूसरों की मदद करने के बजाय उन्हें नीचा दिखाता है। क्या आप उसकी फोटो को बार–बार देखना चाहेंगे? शायद नहीं। इसके विपरीत, एक ऐसा व्यक्ति जिसकी शक्ल साधारण है लेकिन उसके कर्म महान हैं, उसकी छवि लोगों के दिलों में बस जाती है।

"खूबसूरती का बाजार" आज विज्ञापनों और क्रीमों से भरा पड़ा है, लेकिन कोई भी क्रीम इंसान की नीयत को साफ नहीं कर सकती। यदि आपके कर्म बुरे हैं और आपकी छवि समाज में खराब है, तो दुनिया की सबसे महंगी एडिटिंग भी आपकी तस्वीर में वो 'नूर' नहीं ला सकती जो एक नेक इंसान के चेहरे पर होता है। एक बार एक मशहूर समाजसेवक से पूछा गया कि वह कैमरे के सामने इतने सहज क्यों नहीं रहते? उन्होंने बहुत मार्मिक जवाब दिया। उन्होंने कहा, "कैमरा मेरी त्वचा की रंगत देख सकता है, मेरी आत्मा की गहराई नहीं। मुझे इस बात की चिंता नहीं कि लोग मुझे फोटो में कैसा देखते हैं, मुझे चिंता इस बात की है कि जब मैं उनके सामने खड़ा होऊं, तो क्या वे मुझ पर भरोसा कर पाएंगे?" यही 'भरोसा' आपकी असली इमेज है। एक व्यक्ति जिसकी सूरत साधारण है लेकिन वह संकट के समय दूसरों के काम आता है, उसकी इमेज किसी भी सुपरस्टार से कहीं बड़ी होती है। वहीं दूसरी ओर, यदि कोई व्यक्ति अत्यंत सुंदर है लेकिन उसके बोल कड़वे हैं और व्यवहार में अहंकार है, तो लोग उसकी फोटो तो देख सकते हैं, पर उसके साथ खड़ा होना पसंद नहीं करेंगे। कर्म ही आपकी असली तस्वीर हैं।

आज के दौर में 'पर्सनल ब्रांडिंग' की बहुत चर्चा होती है। आपकी असली ब्रांडिंग आपकी सीरत है। ईमानदारी आपकी धुंधली फोटो में भी चमक भर देती है। दयालुता वह फिल्टर है जो आपकी छवि को हर दिल में उतार देता है। अच्छे कर्म उस 'एचडी क्वालिटी' की तरह हैं जो कभी पिक्सेलेट नहीं होते। फोटो सिर्फ एक पल का 'स्क्रीनशॉट' है, जबकि इमेज आपके पूरे जीवन का 'वीडियो' है। फोटो को लाइक मिलते हैं, लेकिन इमेज को सम्मान मिलता है। इसलिए, आईने के सामने खड़े होकर सिर्फ चेहरे की खामियां मत ढूंढिए, बल्कि अपने भीतर झांकिए और अपनी सीरत को संवारिए। क्योंकि जब दुनिया आपको याद करेगी, तो उसे आपकी प्रोफाइल पिक्चर याद नहीं आएगी, उसे याद आएगा आपका वह व्यक्तित्व जिसने किसी के जीवन में बदलाव लाया था।

इतिहास के पन्नों से एक उदाहरण लें– डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम। क्या कभी किसी ने उनकी सुंदरता की चर्चा की? नहीं। उनकी पहचान उनके बिखरे हुए बाल और सादगी भरे चेहरे से नहीं, बल्कि उनके द्वारा देश के लिए किए गए महान कार्यों से बनी। आज जब हम उनकी तस्वीर देखते हैं, तो हमें सुंदरता नहीं, बल्कि 'सम्मान' महसूस होता है। उनकी 'इमेज' उनकी फोटो से कहीं ज्यादा शक्तिशाली थी और आज घरों में कार्यालयों और कई महत्वपूर्ण स्थानों में लगी मिलती है। एक बार एक बहुत बड़े कलाकार की फोटो अखबार में छपी। वह दिखने में बहुत साधारण थे। किसी ने उनसे कहा, "सर, आपकी फोटो अच्छी नहीं आई।" उन्होंने मुस्कुराकर जवाब दिया, "फोटो तो कैमरे की काबिलियत है, मेरी असली खूबसूरती तो मेरे काम में है जो लोगों की जिंदगी बदल रहा है।" फोटो सिर्फ एक 'फ्रेम' है, लेकिन आपकी इमेज आपका 'नाम' है।

विद्या मित्रं प्रवासेषु, भार्या मित्रं गृहेषु च।
व्याधितस्यौषधं मित्रं, धर्मो मित्रं मृतस्य च ।।

– चाणक्य नीति

अर्थः यात्रा के समय ज्ञान एक मित्र की तरह साथ देता है, घर में पत्नी एक मित्र की तरह साथ देती हैं, बीमारी के समय दवाए साथ निभाती हैं और अंत समय में धर्म सबसे बड़ा मित्र होता है।

अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।

– महा उपनिषद्

अर्थः तेरा मेरा करने वाले लोगों की सोच उन्हें बहुत छोटा बना देती है, जबकि जो व्यक्ति सभी का हित सोचते हैं, उदार चरित्र के हैं, उनका कुटुंब पूरा संसार होता है।

टीएचडीसी और टिहरीः ऊर्जा विकास की गौरवगाथा

संस्मरण

राजपाल आर्य
सुरक्षा विभाग, टिहरी

उत्तराखंड की पावन भूमि, जहाँ भागीरथी और भिलंगना की कल–कल धारा बहती है। आज ऊर्जा के क्षेत्र में भी एक नया इतिहास लिख रही है। इस इतिहास की आधारशिला है टिहरी बाँध और इसके पीछे कार्यरत संस्था टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड जिसका पूर्व नाम टिहरी हाइड्रो डेवलपमेंट कारपोरेशन था।

टिहरी की पहचान :

कभी टिहरी को केवल अपने प्राकृतिक सौंदर्य और सांस्कृतिक धरोहर के लिए जाना जाता था, किंतु आज इसका नाम ऊर्जा के क्षेत्र में देश और दुनिया में गर्व से लिया जाता है। एशिया के सबसे ऊंचे बांधों में शामिल टिहरी बांध केवल इजीनियरिंग की अद्वितीय मिसाल नहीं, बल्कि भारत की तकनीकी क्रांति, आर्थिक सशक्तिकरण और सामाजिक प्रगति का उज्ज्वल प्रतीक है।

बिजली की नई किरण :

टिहरी परियोजना से बनने वाली बिजली से लाखों घर रौशन होते हैं। जिसमें उत्तर प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान और उत्तराखंड जैसे राज्यों को इस बाँध से ऊर्जा प्राप्त होती है। टिहरी बाँध एक पर्यावरण मित्र परियोजना है, जो केवल ऊर्जा उत्पादन तक सीमित नहीं है। यह करोड़ों लोगों को पेयजल उपलब्ध कराता है और खेतों को हरियाली देने के लिए सिंचाई की जीवनधारा भी बनता है।

इस प्रकार, टिहरी बाँध करोडों लोगों के जीवन की धारा बन चुका है, जो खेतों को हरियाली, घरों को रोशनी और उद्योगों को शक्ति प्रदान करता है।

टीएचडीसी का उपकार :

टीएचडीसी ने केवल बाँध का निर्माण नहीं किया, बल्कि टिहरी की धरती और यहाँ के लोगों को नई पहचान दी। विस्थापित परिवारों के पुनर्वास और रोजगार की दिशा में उल्लेखनीय कार्य हुआ। शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढाँचे के क्षेत्र में विकास के नए आयाम खुले। आज टिहरी झील पर्यटन का आकर्षण बनकर युवाओं और उद्यमियों के लिए नए अवसर निर्माण कर रही है।

गौरव गाथा

टिहरी बाँध और टीएचडीसी की कहानी केवल ऊर्जा उत्पादन तक सीमित नहीं है। यह कहानी है विश्वास, त्याग और संघर्ष की, जिसने एक छोटे पहाड़ी जनपद का नाम देश में रौशन कर दिया। आज गर्व से कहा जा सकता है कि टिहरी का नाम अब केवल उसकी घाटियों की गूंज में नहीं, बल्कि देश की ऊर्जा की धड़कनों में भी सुनाई देता है और इस उज्ज्वल धरोहर का श्रेय जाता है, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को।

द साइकोलॉजी ऑफ मनी – पुस्तक का सारांश

समीक्षा

अश्वनी आनंद
उप प्रबंधक (एम.पी.एस), ऋषिकेश

लेखक मॉर्गन हौउसेल ने इस पुस्तक में बताया है कि पैसे से जुड़ी सफलता केवल ज्ञान या गणित पर निर्भर नहीं करती, बल्कि व्यक्ति के व्यवहार, धैर्य, आदतों और भावनाओं पर अधिक निर्भर करती है। यह पुस्तक हमें बताती है कि धन कमाने से ज्यादा महत्वपूर्ण उसे समझदारी से संभालना और लंबे समय तक बनाए रखना है।

अध्याय 1 : नो वन इज क्रेजी

इस अध्याय में लेखक बताते हैं कि हर व्यक्ति अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर आर्थिक निर्णय लेता है। जिसने गरीबी, मंदी या आर्थिक संकट देखा हो, उसकी सोच अलग होगी, जबकि जिसने विकास और अवसर देखे हों, वह अधिक जोखिम लेने के लिए तैयार रहेगा। इसलिए लोगों के वित्तीय निर्णयों को केवल सही या गलत कहना उचित नहीं है, क्योंकि हर निर्णय के पीछे व्यक्तिगत अनुभव और परिस्थितियाँ होती हैं।

"Your personal experiences with money make up may be 0-00000001% of what's happened in the world, but may be 80% of how you think the world works."

अध्याय 2 : लक ऐंड रिस्क

लेखक इस अध्याय में समझाते हैं कि सफलता और असफलता केवल मेहनत का परिणाम नहीं होती। कई बार किस्मत, सही समय और परिस्थितियाँ भी बहुत बड़ा योगदान देती हैं। कुछ लोग सही समय और अवसर मिलने के कारण अत्यधिक सफल हो जाते हैं, जबकि कई मेहनती लोग जोखिम और दुर्भाग्य के कारण पीछे रह जाते हैं। इसलिए किसी की सफलता या असफलता को देखकर पूरी कहानी समझे बिना निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए।

"Nothing is as good or as bad as it seems."

अध्याय 3 : नेवर इनफ

यह अध्याय लालच और असंतोष की मानसिकता पर आधारित है। लेखक बताते हैं कि बहुत से लोग अपने पास पर्याप्त धन होने के बाद भी अधिक पाने की इच्छा में जोखिम लेते रहते हैं। "और अधिक" की चाह कई बार लोगों को गलत निर्णय लेने और आर्थिक संकट में फँसाने का कारण बनती है। जीवन में यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि वास्तव में हमारे लिए कितना पर्याप्त है।

"There is no reason to risk what you have and need for what you don't have and don't need."

अध्याय 4 : कन्फाउंडिंग कम्पाउंडिंग

इस अध्याय में लेखक चक्रवृद्धि की शक्ति को समझाते हैं। छोटे–छोटे निवेश और लगातार धैर्य लंबे समय में बहुत बड़े परिणाम दे सकते हैं। लेखक वारेन बफेट का उदाहरण देकर बताते हैं कि उनकी अधिकांश संपत्ति लंबे समय तक निवेशित रहने से बनी है। लेखक समय और धैर्य को वित्तीय सफलता का सबसे महत्वपूर्ण तत्व बताते हैं।

*"Good investing is not necessarily about making good decisions-
It's about consistently not screwing up."*

अध्याय 5 : गेटिंग वेल्दी वर्सेस स्टेइंग वेल्दी

लेखक बताते हैं कि धन कमाना और उसे लंबे समय तक बनाए रखना दो अलग–अलग कौशल हैं। धन कमाने के लिए जोखिम और साहस की आवश्यकता हो सकती है, लेकिन उसे सुरक्षित रखने के लिए अनुशासन और सावधानी जरूरी होती है। वित्तीय जीवन में सबसे महत्वपूर्ण बात है, लंबे समय तक टिके रहना।

"Getting money requires taking risks- Keeping money requires the opposite."

अध्याय 6 : टेल्स, यू विन

इस अध्याय में लेखक बताते हैं कि जीवन और निवेश में हर निर्णय समान महत्व नहीं रखता। अक्सर कुछ ही निर्णय या अवसर ऐसे होते हैं जो सबसे बड़ा प्रभाव डालते हैं। अधिकांश सफल निवेशकों की कमाई कुछ चुनिंदा निवेशों से होती है। इसलिए हर समय पूर्णता की कोशिश करने के बजाय अच्छे अवसरों की प्रतीक्षा करना अधिक महत्वपूर्ण है।

"You can be wrong half the time and still make a fortune."

अध्याय 7 : फ्रीडम

लेखक के अनुसार पैसे का सबसे बड़ा उद्देश्य विलासिता नहीं, बल्कि स्वतंत्रता है। धन व्यक्ति को अपने समय और जीवन पर नियंत्रण देता है। जब इंसान आर्थिक रूप से सुरक्षित होता है, तब वह अपनी पसंद के अनुसार निर्णय ले सकता है और तनावमुक्त जीवन जी सकता है। वास्तविक संपत्ति वही है जो व्यक्ति को स्वतंत्रता और मानसिक शांति प्रदान करे।

"Controlling your time is the highest dividend money pays."

अध्याय 8 : मैन इन द कार पैराडॉक्स

इस अध्याय में लेखक दिखावे और सामाजिक स्वीकृति की मानसिकता को समझाते हैं। लोग अक्सर महंगी कार, घर या वस्तुएँ दूसरों को प्रभावित करने के लिए खरीदते हैं, लेकिन वास्तव में लोग वस्तु को देखते हैं, व्यक्ति को नहीं। बाहरी दिखावा वास्तविक सम्मान नहीं दिलाता।

"No one is impressed with your possessions as much as you are."

अध्याय 9 : वेल्थ इज व्हाट यू डोंट सी

लेखक बताते हैं कि धन और दिखावे में अंतर होता है। महंगी वस्तुएँ खरीदना अमीरी दिखा सकता है, लेकिन वास्तविक संपत्ति वह है जिसे व्यक्ति खर्च नहीं करता बल्कि बचाकर निवेश करता है। बचत और निवेश ही वास्तविक धन का निर्माण करते हैं।

"Wealth is what you don't see."

अध्याय 10 : सेव मनी

इस अध्याय में लेखक कहते हैं कि बचत केवल अधिक आय पर निर्भर नहीं करती, बल्कि व्यक्ति की आदतों और जीवनशैली पर निर्भर करती है। बचत व्यक्ति को संकट के समय सुरक्षा, मानसिक शांति और नए अवसरों का लाभ उठाने की क्षमता देती है। नियमित बचत आर्थिक स्वतंत्रता की सबसे मजबूत नींव है।

"Saving money is the gap between your ego and your income."

अध्याय 11 : रीजनबल > रैशनल

लेखक बताते हैं कि वित्तीय निर्णय केवल गणितीय रूप से सही होना पर्याप्त नहीं है। ऐसी योजना अधिक उपयोगी होती है जिसे व्यक्ति लंबे समय तक मानसिक शांति के साथ निभा सके। व्यावहारिक होना कई बार पूरी तरह तर्कसंगत होने से अधिक महत्वपूर्ण होता है।

"Aiming to be mostly reasonable works better than trying to be coldly rational."

अध्याय 12 : सरप्राइज!

इस अध्याय में लेखक बताते हैं कि दुनिया में भविष्य पूरी तरह अनुमानित नहीं हो सकता। इतिहास में आर्थिक मंदी, युद्ध, महामारी और तकनीकी बदलाव जैसी घटनाएँ अचानक हुई हैं। इसलिए किसी भी वित्तीय योजना में अनिश्चित परिस्थितियों के लिए तैयारी रखना आवश्यक है।

"History is the study of change, ironically used as a map of the future."

अध्याय 13 : रूम फॉर एरर

लेखक इस अध्याय में अतिरिक्त सुरक्षा रखने के महत्व को समझाते हैं। जीवन और निवेश में हमेशा बचाव की गुंजाइश रखनी चाहिए, जैसे इमरजेंसी फंड, सीमित कर्ज और अतिरिक्त बचत। यह कठिन परिस्थितियों में आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है।

"The most important part of every plan is planning on your plan not going according to plan."

अध्याय 14 : यू विल चेंज

इस अध्याय में लेखक बताते हैं कि समय के साथ व्यक्ति की प्राथमिकताएँ और इच्छाएँ बदल जाती हैं। जो चीजें युवावस्था में महत्वपूर्ण लगती हैं, वे आगे चलकर महत्व खो सकती हैं। इसलिए वित्तीय योजनाओं में लचीलापन होना चाहिए।

"Long-term planning is harder than it seems because people's goals and desires change over time."

अध्याय 15 : नथिंग इज फ्री

लेखक बताते हैं कि निवेश और सफलता मुफ्त में नहीं मिलती। अधिक लाभ पाने के लिए व्यक्ति को जोखिम, डर, अस्थिरता और धैर्य की कीमत चुकानी पड़ती है। जो लोग बाजार के उतार–चढ़ाव को सहन नहीं कर पाते, वे लंबे समय के लाभ से वंचित रह जाते हैं।

"Everything has a price, but not all prices appear on labels."

अध्याय 16 : यू ऐंड मी

इस अध्याय में लेखक समझाते हैं कि हर व्यक्ति की आर्थिक स्थिति, लक्ष्य और समय सीमा अलग होती है। इसलिए दूसरों की निवेश रणनीति की नकल करना गलत हो सकता है। सही निर्णय वही है जो व्यक्ति की परिस्थितियों के अनुकूल हो।

"Few things matter more with money than understanding your own time horizon."

अध्याय 17 : द सिडक्शन ऑफ पेसिमिज्म

लेखक बताते हैं कि लोग सकारात्मक समाचारों की तुलना में नकारात्मक समाचारों पर अधिक ध्यान देते हैं। आर्थिक संकट और मंदी की खबरें अधिक प्रभाव डालती हैं, लेकिन लंबे समय में दुनिया लगातार प्रगति करती रहती है।

"Pessimism sounds smarter- Optimism often sounds like a sales pitch."

अध्याय 18 : व्हेन यू विल बिलीव एनीथिंग

इस अध्याय में लेखक बताते हैं कि इंसान जटिल घटनाओं को सरल कहानियों के माध्यम से समझने की कोशिश करता है। कई बार लोग बिना पूरी जानकारी के आत्मविश्वास से भरी बातों पर विश्वास कर लेते हैं। लेखक सुझाव देते है कि इंसान को हर परिस्थिति में अपने विवेक से कार्य करना चाहिए।

"Everyone has an incomplete view of the world."

अध्याय 19 : ऑल टुगेदर नाऊ

यह अध्याय पूरी पुस्तक का सार प्रस्तुत करता है। लेखक बताते हैं कि सफल वित्तीय जीवन के लिए विनम्रता, धैर्य, नियमित बचत और लंबे समय की सोच अत्यंत आवश्यक है। धन का उद्देश्य केवल अमीर दिखना नहीं, बल्कि सुरक्षित और स्वतंत्र जीवन जीना होना चाहिए।

"Manage your money in a way that helps you sleep at night."

अध्याय 20 : कन्फेशंस

अंतिम अध्याय में लेखक अपनी व्यक्तिगत वित्तीय आदतों और सिद्धांतों को साझा करते हैं। वे बताते हैं कि साधारण जीवन, अधिक बचत, सीमित अपेक्षाएँ और मानसिक शांति पर ध्यान देना ही वास्तविक आर्थिक सफलता का आधार है।

"Independence is the highest form of wealth."

****

फूलों की मनमोहकता

कविता

दमयन्ती रावत
कनि. अधिकारी (कारपोरेट नियोजन), ऋषिकेश

सीखा कहां से, हुनर ये, तुमने मन लुभाने का, सबका मन मोह जाने का, सबको अपना बनाने का।
कैसे प्रकृति से तुमने इतनी प्रगाढता बढाई है, जो प्रकृति, सारे रंगों से रंगकर तुमने सजाई है।
राह चलता पथिक भी, यूं ही ठिठक जाता है, जब रूप तुम्हारा, यूं खिला–खिला नजर आता है।
मन चाहता है कि, संग तुम्हारे बैठ जाऊं, देखकर रूप तुम्हारा बस तुम में ही खो जाऊं।
मंद–मंद, सुगंध हवा में जब तुम फैलाते हो, बरबस ही, हर मन को तुम बहुत लुभाते हो।
सेवा, श्रम, प्रेम, सम्मान हर रूप में खुशियाँ लाते हो, जीवन के हर सुख–दुख में श्रम, प्रेम भाव दर्शाते हो।
कांटों से बिंधकर भी तुम, हरदम यूं मुस्कराते हो, कर समर्पित जीवन अपना, बस खुशियां ही बिखराते हो।
सुंदर, सरस, सुकोमल स्वभाव तुम्हारा, जीना हमें सिखाता है, होता वही श्रेयकर जीवन में, जो काम किसी के आता है।

****

मरहम–आँसुओं का

कविता

अजय रतूड़ी
सहायक अभियंता (सतर्कता), ऋषिकेश

आँसू बोझ नहीं, ये बोझो को हटाते हैं,
तपते जख्मों पे मरहम सा लगाते हैं,
पर्दे के पार खड़े शख्स का दिल भी हल्का होता,
तुम जो रो देती एक बार तो कितना अच्छा होता,
सोच वो भी तो रोता होगा, तुझे ऐसे पाकर के,
सुकून पाते होंगे वो भी किसी कोने जाकर के,
तू तो खामोश है कि तमाशा ना बने,
बांध आँसू का बने, बहता दरिया ना बने,
इस सलीके ने ही, खुद से तुझे मिलने ना दिया,
तपते जख्मों पे, आँसुओं का मरहम ना मिला,
तेरी आँखों में आँसू का एक कतरा ना मिला।
वो जो महफूज हैं, मुस्तकिल हैं, हाथों की छुअन,
बाबा का कंधा वो सहारा वो तेरा बचपन,
लिखी हसरतें दिल के सफे पे लेकिन,
जब्त–ए–गम को, तेरा कभी हाशिया न मिला।
दिल की बातों को जताना मुश्किल,
खुद को समझाना और समझना मुश्किल,
उसको क्या खाक दवा लगेगी उम्र भर,
जख्म–ए–दिल को जिसने कभी सिलने न दिया।

****

भागीरथीपुरम : प्रकृति और प्रगति

कविता

राजपाल आर्य
सुरक्षा विभाग, टिहरी

पर्वतों की गोद में सोया स्वर्ग,
भागीरथी गाती है जीवन का राग।
हरी–भरी घाटी, निर्मल हवाएँ,
धरती का यह रत्न मन को भाए।
टिहरी की झील चमकती दर्पण,
नभ से मिलती, धरती का गर्व बन।
गगन छूते वृक्ष, नदी की तान,
जहाँ प्रकृति और प्रगति का हो सम्मान।
टीएचडीसी का दीप यहाँ जलता,
ऊर्जा का संदेश हर घर तक चलता।
नदी की शक्ति को साध कर रखा,
प्रकृति से संवाद निभा कर रखा।
यहाँ विकास भी है, पर संतुलन संग,
हरियाली में बसती जीवन की उमंग।
पहाड़ों की गोद, तकनीक का साथ,
भविष्य का सुनहरा खुलता है पाथ।
भागीरथी पुरम – संदेश यही देता,
जो प्रकृति सँजोए वही सच्चा नेता।
धरती का सौंदर्य, प्रगति का गान,
यहीं बुनता है भारत का स्वप्न महान।
पर्वत की छाँव, झील की मुस्कान,
हर हृदय में गूंजे इसका सम्मान।
गढ़वाली धरती अमिट पहचान,
देवभूमि का है यह अनुपम वरदान।

****

विजयी

कविता

अश्वनी आनंद
उप प्रबंधक (एम.पी.एस), ऋषिकेश

रात घनी, अंधकार भरी। बरखा भी पड़ी, घनघोर बड़ी।
कौंधे है पवि, नभ में वो कहीं। पथ रोक रही, उन्माद नदी।

विजय है बड़ी, उस पार खड़ी। गरिमा में सजी, इठला वो रही।
परिहास से भरी, ठठ्ठा वो रही। अहंकार में लिपी, ललकार वो रही।

हो कर निर्भयी, कर नाद अभी। अंगार में तपी, वो श्रम की छवि।
अविजित वो शिखी, कर प्रहार अभी। होकर विजयी, कर सुबह नयी।

****

हम हैं टीएचडीसी

कविता

कुलदीप सिंह
सहायक अभियंता (विद्युत परिकल्प), ऋषिकेश

हम हैं टीएचडीसी, ऊर्जा की पहचान,
जल की हर बूँद में बसता हिन्दुस्तान।
हम हैं टीएचडीसी, शक्ति का अरमान,
रोशन करें देश को, अपना है अभियान।।
हिमगिरि की गोदी से गंगा जब आती है,
कल–कल करती धारा गीत सुनाती है,
बाँधो की बांहो में रूककर सवँरती,
जलाशय में शक्ति बन संचित भरती।
इनटेक से पेनस्टॉक राह है बनाता,
वेग से जल टरबाइन तक है जाता,
घुमें पंखुडी, गुँजे अभियान,
जनरेटर रच दे उजला जहान।
हम हैं टीएचडीसी, ऊर्जा की पहचान,
जल की हर बूँद में बसता हिन्दुस्तान।
हम हैं टीएचडीसी, शक्ति का अरमान,
रोशन करें देश को, अपना है अभियान।।
टरबाइन बोले मधुरिम तान,
बन जाए जल से विद्युत प्राण,
ट्रांसफार्मर दे दे ऊंची उडान,
स्विचयार्ड रखे संतुलन महान
तारों की रेखा नभ तक जाये,
राष्ट्रीय ग्रिड से शक्ति मिलाये,
हर घर–आंगन दीप जलाए
भारत मुस्काए, गीत सुनाए।
हम हैं टीएचडीसी, ऊर्जा की पहचान,
जल की हर बूँद में बसता हिन्दुस्तान।
हम हैं टीएचडीसी, शक्ति का अरमान,
रोशन करें देश को, अपना है अभियान।।
नियंत्रण कक्ष की सजग निगाहें,
हर संकेत पर तत्पर बांहें,
अभियंता का ज्ञान प्रखर,
श्रमिक का परिश्रम अमर–अमर।
पर्यावरण का ध्यान निभाएं,
संतुलन से विकास बढाएं,
हर मेगावाट से श्रम का मान
हर किरण में भारत की शान।
हम हैं टीएचडीसी, राष्ट्र की शान
जल से लिखते उजला भविष्य–विधान।
हम हैं टीएचडीसी, विश्वास महान,
ऊर्जा से सजे अपना हिन्दुस्तान।।

****

मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु यदि कोई है तो वह है उसका अज्ञान – *चाणक्य*

सेवानिवृत्ति की संध्या

रश्मि बडोनी
वरि.प्रबंधक (आई.टी.), ऋषिकेश

कविता

आज की महफिल कुछ अलग सी है,
शाम का एहसास भी अलग सा है।
मिलने और बिछुड़ने के
दो मंजर एक साथ खड़े हैं–
जैसे वक्त ने आज,
दो रास्तों को एक मोड़ पर ला दिया हो।
जैसे दिल ने आज,
दो जिंदगियाँ एक साथ जी ली हो
एक वो, जो वर्षों से साथ थी,
और एक वो,
जो आज नई राहों की ओर बढ़ चली है।
पूरा दिन भर का साथ,
अब धीरे–धीरे विदा ले रहा है,
और शाम के रिश्ते फिर से जुड़ रहे हैं।
लेकिन कुछ रिश्ते और कुछ यादें
ऑफिस छोड़ने से नहीं छूटते वे जीवन भर दिल के
सबसे करीब रहते हैं।
ऑफिस, फाइलें, पंच और मीटिंग–
ये सब कल से खामोश हो जाएंगे,
बस यादों की अलमारी में
सलीके से रख दिए जाएंगे।
अब बस होंगे तो फुरसत के वो पल
जो अब तक इंतजार में थे
जिन पर अब सिर्फ मेरा हक होगा ।
जिनके लिए कभी समय नहीं था,
'कल' कहकर टाल दिया करते थे,
अब वही समय सिर्फ मेरा हैं
आज थोड़ा सा भर आया है मन,
आज विदा भी है, और एक दूसरे सुखद
जीवन की शुरुआत भी है,
बीते वर्षों की मेहनत,
साथियों की हँसी,
और अनगिनत यादें,
ये सब मेरे साथ चलेंगी
हर नई सुबह की तरह।
आज कदम जरूर ठहरते हैं,
पर सफर थमता नहीं,
क्योंकि जीवन की राहें,
विदा के बाद भी आगे बढ़ती रहती हैं,
और यही सेवानिवृत्ति है।

****

अदृश्य लहरें

विपुल विश्वकर्मा
सहायक प्रबंधक (एमपीएस विभाग), ऋषिकेश

कविता

ये जो लहरें उठ रही हैं मेरे दिल के अंदर, उधेड़ दे रही हैं ख्यालों की परतें सुनामी बनकर,
सैलाबों का संसार बसा रही हैं तूफान बनकर, मगर हंसी दिख रही है चेहरे पे मुस्कान बनकर,
मचल रही है ये भावनाएं समंदर बनकर, भीगा रही हैं मन के आँखों को आँसू बनकर,
रो रही हैं धड़कने अनजान बनकर, सहम रही हैं लहरें फिर खुद ही परेशान बनकर,
कभी उठ रही हैं तेजी से तूफान बनकर, कभी थम जा रही है ये खामोशी बनकर,
हर रात की कहानी बन गई हैं दिल में किताब बनकर, मगर मेरे एहसासों को जिंदा भी रख रही हैं ये धड़कन बनकर।
कभी–कभी ये लहरें रूठ रही हैं इस कदर श्मशान बनकर, आंधियां तो बस नजर आ रही हैं हवा का झोंका बनकर,
और जब ये लहरों की आंधियाँ जा रही हैं दर्द की बरसात बनकर, तो वजूद मेरा मिटा रही हैं बेरहम बनकर।

****

बचपन की यादें

कविता

जी.पी. नौटियाल
उप अधिकारी (केन्द्रीय संचार), ऋषिकेश

मेरी आँखों से गुजरी जो
बीते लम्हों की परछाई,
न फिर रोके रुकी ये आँखें
झट से भर आयी।
वो बचपन गुजरा था जो
घर के आगन में लुढकता सा,
मैं भीगा करता था जिसमें
वो सावन बरसता सा।
याद आयी मुझे
माँ ने थी जो कभी लोरियां गाई,
न फिर रोके रूकी ये आखें
झट से भर आई।
उम्र थी छोटी पर सपने
हम बड़े देखा करते थे,
ये दुनिया प्यारी न थी
हम तो बस खिलौनों पर मरते थे।
जब देखा मैंने वो बचपन का खजाना
किताब कलम और स्याही
न फिर रोके रूकी ये आखें
झट से भर आयी।
याद आया मुझे
भाई बहनों के संग झगड़ना,
शैतानियां कर माँ के
दामन से जा लिपटना,
साथ ही याद आई वो बातें
जो माँ ने समझाई
न फिर रोके रूकी ये आँखें
झट से भर आयी।
आज तन्हाई में जब
वो मासूम बचपन नजर आया
ऐसे लगता है जैसे खुशियों ने
कोई गीत गुन गुनगाया,
जब दिखा सच्चाई का आईना
तो फिर हुई रूसवाई
न फिर रोके रूकी ये आँखें
झट से भर आयी।
पल – पल याद आती हैं
मधुर बचपन तेरी,
हजारो यादें भरी है
ऐ बचपन तेरी,
जब तू निर्णय संसार था मेरा
नादान बचपन से छुआछूत किसने जानी
हर वक्त बस खेलने की ठानी,
बचपन में हवाओं से बातें किया करते थे
चांद तारों पर जाने के सपने संजोया करते थे।
उस कटी पतंग के पीछे दूर तक भागना
हाथ न आये तब भी खुशी से नाचना
ज्यों ही याद आए पल
न फिर रोके रूकी ये आँखें
झट से भर आयी।

****

बस इतनी–सी आजादी... ...

कविता

दवनीत कौर
सहायक प्रबंधक (मा.सं.–भर्ती), ऋषिकेश

किसी ने कहा–
"आजादी का मतलब है,
जो मन करे वो करना!"
मैंने मुस्कुराकर कहा–
आजादी का मतलब है,
जो सही हो, वो चुनने की हिम्मत होना।
नदियाँ जब रास्ता बनाती हैं,
तो पत्थरों से लड़ती नहीं,
बस बहते हुए उन्हें पार कर जाती हैं।
यही तो है सच्ची स्वतंत्रता।
जब विचार खुले हों,
जब सपने बड़े हों,
जब मेहनत अपनी हो,
तब मंजिलें भी करीब हों।
न ऊँच–नीच, न भेद–भाव हो,
न जाति का, न धर्म का भाव हो,
इंसान सिर्फ इंसान हो,
बस यही तो ख्वाब हो।
हर बेटी को पंख मिलें,
हर बेटे को संस्कार मिलें,
दोनों मिलकर आगे बढ़ें,
तभी तो परिवार, समाज और देश खिलें।
आजादी का सही अर्थ यही है–
कर्तव्य, संवेदना और सम्मान के साथ जीना।
अपने लिए भी, सबके लिए भी,
यही है जीवन को सुंदर बनाना।

****

"सेहत का संग्राम"

कविता

मनबीर सिंह राणा
डाटा एंट्री ऑपरेटर (केन्द्रीय संचार), ऋषिकेश

सुबह सवेरे नींद से जागे, जिम जाने की ठानी थी,
टी–शर्ट पहनी, जूते कसे, आँखों में बड़ी हैरानी थी।
शीशे में खुद को देखा तो लगा, कोई कद्दू खड़ा है,
पेट आगे निकला हुआ, जैसे कोई जमींदार बड़ा है।
पड़ोसी बोला– भाई साहब, जरा पेट अंदर कीजिए,
मैंने कहा– "ये मेरा है, आप अपना काम कीजिए।"
डाइटिशियन ने कहा– "बस घास–फूस ही खाना है,"
मैंने सोचा– "क्या मैं इंसान हूँ या मुझे गाय बन जाना है?"
पिज्जा–बर्गर से नाता तोड़ा, अब लौकी से यारी है,
तौबा–तौबा! ये कैसी सेहत बनाने की बीमारी है?
पत्नी बोली– "तुम पतले हो रहे हो, गाल पिचकने लगे हैं"
मैंने मन ही मन सोचा– "बिना खाए अब प्राण निकलने लगे हैं।"
कल रात को सपने में, मुझे 'शाही पनीर' दिखा था,
थाली में सजकर बैठा, जैसे कोई वजीर दिखा था।
उठते ही मैंने खा ली, चुपके से चार रोटियाँ,
भाड़ में जाए डाइट प्लान, अब तो चलेंगी बोटियाँ।

****

“मेरा नववर्ष”

कविता

विकास डंगवाल
कनि. अभियंता (विद्युत), कोटेश्वर

लगी हवा पश्चिमी देशों की, सारे कुप्पा बनकर फूल गए ।
ईसवी सन् तो याद रहा, पर अपना संवत्सर भूल गए ।।
चारों तरफ नए साल का, ऐसा मचा है हो हल्ला।
बेगानी शादी में नाचे, जैसे कोई दीवाना अब्दुल्ला ।।
धरती ठिठुर रही सर्दी से, घना कुहासा छाया है।
कैसा यह नववर्ष है, जिससे सूरज भी शरमाया है।।
सूनी है पेड़ों की डालें, फूल नहीं है उपवन में ।
पर्वत ढके बर्फ से सारे, रंग कहां है जीवन में ।।
बाट जोह रही सारी प्रकृति, आतुरता से फागुन का ।
जैसे रास्ता देख रही हो सजनी अपने साजन का ।।
अभी ना उल्लासित हो इतने, आई अभी बहार नहीं ।
हम अपना नववर्ष मनाएंगे, न्यू ईयर हमें स्वीकार नहीं ।।
लिए बहारे आंचल में, जब चैत्र प्रतिपदा आएगी ।
फूलों का श्रृंगार करके, धरती दुल्हन बन जाएगी ।।
मौसम बड़ा सुहाना होगा, दिल सबके खिल जाएगे ।
झूमेंगी फसलें खेतों में, हम गीत खुशी के गाएंगे ।।
उठो खुद को पहचानो, यूं कब तक सोते रहोगे तुम।
चिन्ह गुलामी के अपने कंधों पर, कब तक ढोते रहोगे तुम ।।
अपनी समृद्ध परंपराओं का, आओ मिलकर मान बढाएंगे ।
आर्याव्रत के वासी हैं हम, अपना नववर्ष मनाएंगे
अपना नव वर्ष चैत्र प्रतिपदा को मनाएंगे।।
चैत्र शुक्ल की प्रथम तिथि, नव वर्ष मनाया जाएगा ।
आर्यावर्त की पुण्य भूमि पर माता का जय गान सुनाया जाएगा ।
युक्ति प्रमाण से स्वयं सिद्ध, नव वर्ष हो हमारा प्रसिद्ध ।
आर्यों की कृति हो सदा-सदा नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा ।।
गृह-गृह हर्षित होकर कलश स्थापित करते हैं।
माता के आगमन हेतु नवदीप प्रज्ज्वलित करते हैं।
नवदीप प्रज्ज्वलित करते हैं।।

****

फूलों की वसीयत

कविता

आर.पी.रतूड़ी
उप महाप्रबंधक (एम.पी.एस.), ऋषिकेश

कुछ सालों से मानो, फूल मुझसे रूठ गए,
हर साल फूल बंटते,
पर मैं खाली हाथ लौट आता,
किसी से कहता नहीं फिर भी उनको,
न जाने कैसे आभास हो जाता,
और वो धीरे से पूछते,
क्या बात है कई दिनों से,
फूलों की कोई बात नहीं हुई,
मैं झेंपकर कहता बस यूं ही,
छोडिये, रहने दीजिये,
और वो रहने देते,
फिर उत्साह से कहते,
चलो आज कुछ बनाते हैं,
फिर वो अपने पसंदीदा व्यंजन बनाते,
हम साथ बैठकर खाते,
और वो अपने किस्से सुनाते,
फूलों की बात आई गई हो जाती,
यूं ही साल–दर–साल गुजरते गए,
फूलों का मौसम आता,
मैं खाली हाथ लौट आता,
फिर उनको आभास हो जाता,
फिर वही सिलसिला दोहराता,
फिर वो कुछ बनाते,
फिर किस्से–कहानियां सुनाते,
और फूलों की बात कहीं खो जाती,
फिर एक दिन अचानक,
सालों का वो तारतम्य टूट गया,
फूलों का मौसम आने से पहले ही,
फूलों की बात पूछने वाला,
कुछ बनाकर खिलाने वाला,
किस्से कहानियां सुनाकर,
मायूसी भुलाने वाला,
कहीं दूर, बहुत दूर चला गया,
सालों बाद फूलों के मौसम में,
मुझे भी कुछ फूल मिले,
पर उनकी बात करने वाला,
अब कोई नहीं है,
हृदय चीखता है पूछो पूछते क्यों नहीं,
फूलों की बात अब क्यों करते नहीं,
आज क्यों कुछ बनाते नहीं,
किस्से–कहानियां क्यों अब सुनाते नहीं,
जवाब में सिर्फ खामोशी कराहती है,
वर्षों बाद मिले इन फूलों की,
अब कोई औकात नहीं रहती है,
फिर एक दिन उनके सामान में,
एक बड़ी पोटली मिली,
खोलते ही चारों ओर,
फूल ही फूल बिखर गए,
मानों बड़े जतन से साल दर साल,
वो फूल ही सहेजते रहे,
साथ ही उनका एक सन्देश मिला,
बेटा सदैव अपने धर्म का पालन करना,
अन्याय किसी से नहीं करना,
इन फूलों पर हक सबका है,
फूल सबको बराबर देना,
वो फूल बांटने की जिम्मेदारी,
मुझ पर छोड़ कर चले गए,
मेरे पिता फूलों की वसीयत कर गए।

****

राजभाषा विभाग द्वारा जारी
हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2026–27 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं	कार्य विवरण	क्षेत्र	पत्राचार का अपेक्षित प्रतिशत	
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई–मेल सहित)	'क' क्षेत्र	1. 'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को	100%
			2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को	100%
			3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को	70%
			4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	100%
		'ख' क्षेत्र	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को	90%
			2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को	90%
			3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को	60%
			4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	90%
		'ग' क्षेत्र	1. 'ग' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को	60%
			2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र का	60%
			3. 'ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को	60%
			4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	60%

अन्य मदें

क्र.सं	अन्य मदें	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	80%	55%	35%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%	65%	35%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	45%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/ की–बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	70%	60%	35%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई–पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय ।	50%	50%	50%

10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रानिक उपकरणों जिनमें कम्प्यूटर भी शामिल है, की खरीद	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं।	100%	100%	100%
13(i)	मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों के द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
(ii)	मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
(iii)	विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों / उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	 वर्ष में 02 बैठकें वर्ष में 02 बैठकें (प्रति छमाही 01 बैठक) वर्ष में 04 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हो।	45%	35%	25%
		(न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, ''क'' क्षेत्र में कुल कार्य का 45%, ''ख'' क्षेत्र में 30% और ''ग'' क्षेत्र में 20% कार्य हिंदी में किया जाए।		

****

राज्यों का वर्गीकरण–क्षेत्रवार

हिंदी बोले और लिखे जाने की प्रधानता के आधार पर देश के राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को नीचे दिए अनुसार तीन क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है–

क–क्षेत्र	बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, अंडमान निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली, उत्तराखंड, झारखंड, छत्तीसगढ़
ख–क्षेत्र	गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, चंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र, दादरा एवं नगर हवेली, दमन दीव
ग–क्षेत्र	उपर्युक्त 'क' एवं 'ख' को छोड़कर शेष सभी राज्य

राजभाषा गतिविधियां एवं कार्यक्रम

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 06 जनवरी, 2026 को वरिष्ठ कार्यपालकों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में श्री डी.पी. पात्रो, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.– भर्ती) ने अतिथि संकाय सदस्य, श्री शमशेर सिंह, उप निदेशक (राजभाषा), विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार का प्लांट एवं शॉल भेंटकर स्वागत किया। श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) ने कार्यक्रम की रूपरेखा पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर श्री शमशेर सिंह ने राजभाषा नीति, नियम एवं अधिनियम के बारे में जानकारी देते हुए सरकारी कामकाज में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग करने हेतु प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया।

कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों को संबोधित करते श्री शमशेर सिंह, उप निदेशक (रा.भा.) विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार

डॉ. अमर नाथ त्रिपाठी, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) की गरिमामयी उपस्थिति में प्रतिभागियों को संबोधित करते श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), हरिद्वार के सदस्य संस्थानों के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए कारपोरेट कार्यालय में 12 जून, 2026 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में टीएचडीसी के उप महाप्रबंधक स्तर के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी प्रतिभागिता की। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि डॉ. अमर नाथ त्रिपाठी, अध्यक्ष (नराकास हरिद्वार) एवं मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) तथा श्री डी.पी. पात्रो, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) का स्वागत प्लांट भेंट कर किया गया। अपने संबोधन के दौरान डॉ. त्रिपाठी ने दिनांक 22.05.2026 को माननीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उपसमिति द्वारा किए गए हालिया निरीक्षण का उल्लेख करते हुए कहा कि सदस्य संस्थानों की रिपोर्टों में आंकड़े भरने में होने वाली त्रुटियों को संसदीय समिति ने अत्यंत गंभीरता से लिया है। उन्होंने संस्थानों से कहा कि वे केवल तथ्यपरक एवं सटीक आंकड़े ही प्रस्तुत करें। कार्यशाला में नराकास के सदस्य सचिव एवं उप प्रबंधक (राजभाषा), श्री पंकज कुमार शर्मा ने प्रतिभागियों के साथ केंद्र सरकार की राजभाषा नीति, नियमों तथा अधिनियमों पर व्यापक चर्चा की। इसके साथ ही, उन्होंने गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2026–27 की प्रमुख मदों तथा तिमाही प्रगति रिपोर्ट के आंकड़ों को शुद्धता से भरने के तौर–तरीकों के बारे में विस्तार से मार्गदर्शन किया। प्रतिभागियों को रोजमर्रा के सरकारी कामकाज में एआई टूल्स के प्रयोग के बारे में भी बताया गया। इस कार्यशाला में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के अतिरिक्त बैंक ऑफ बड़ौदा, आईडीबीआई बैंक, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग, रेल विकास निगम लिमिटेड, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, एसएसबी श्रीनगर, एनआईटी, श्रीनगर तथा हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रतिनिधियों ने सहभागिता की। कार्यशाला में कुल मिलाकर 33 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

टिहरी एवं कोटेश्वर

यूनिट कार्यालय, टिहरी में टिहरी एवं कोटेश्वर के वरि. कार्यपालकों के लिए 07 जनवरी, 2026 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में श्री एम.के.सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (टिहरी कॉम्प्लेक्स) ने अतिथि संकाय सदस्य, श्री शमशेर सिंह, उप निदेशक (राजभाषा), विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार का पुष्प गुच्छ एवं पुस्तक भेंटकर स्वागत किया। सुश्री बानी शुक्ला, सहा. प्रबंधक (राजभाषा) ने कार्यक्रम की रूपरेखा पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर श्री शमशेर सिंह ने राजभाषा नीति, नियम एवं अधिनियम के बारे में जानकारी देते हुए सरकारी कामकाज में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग करने हेतु प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया।

दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन करते श्री एम.के. सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (टीसी) एवं अन्य अधिकारीगण

हिंदी कार्यशाला के उद्घाटन सत्र का दृश्य

वित्तीय वर्ष 2026–27 की पहली तिमाही में 12 जून, 2026 को टिहरी एवं कोटेश्वर परियोजना के अधिकारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में टिहरी कार्यालय के 28 एवं कोटेश्वर कार्यालय के 12 अधिकारियों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। उद्घाटन अवसर पर उप महाप्रबंधक(मा.सं. एवं प्रशा.), श्री मोहन सिंह ने अपने संबोधन में राजभाषा हिंदी के प्रभावी एवं व्यावहारिक प्रयोग पर बल देते हुए कहा कि हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग न केवल राजभाषा नीति के सफल क्रियान्वयन में सहायक है, बल्कि यह प्रशासनिक कार्यों को अधिक सरल एवं प्रभावी बनाता है। कार्यशाला में अतिथि संकाय के रूप में डॉ. सुशील कोटनाला एवं डॉ. गुड्डी बिष्ट ने अपने ज्ञानवर्धक व्याख्यानों से प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया।

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी

एनसीआर कार्यालय कौशांबी में दिनांक 23 जून, 2026 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संकाय सदस्य, विद्युत मंत्रालय के उप निदेशक (राजभाषा), श्री शमशेर सिंह का स्वागत अपर महाप्रबंधक (वित्त), श्री जी. राधाकृष्णन द्वारा प्लांट एवं शॉल भेंट कर किया गया। कार्यशाला में श्री जी. राधाकृष्णन, अपर महाप्रबंधक (वित्त), श्री मल्लिकार्जुन उदयगिरि, उप महाप्रबंधक (न्यू पीएसपी), उप प्रबंधक (राजभाषा), श्री पंकज कुमार शर्मा, श्रीमती मीनल श्रीवास्तव, सहायक प्रबंधक (मा.सं.–राजभाषा) तथा श्री आशीष कुमार जैन, कनिष्ठ कार्यपालक (राजभाषा) सहित 11 अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। उप निदेशक (राजभाषा), श्री शमशेर सिंह ने प्रतिभागियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति, राजभाषा के संबंध में संवैधानिक प्रावधान, अधिनियमों एवं नियमों की जानकारी दी।

श्री शमशेर सिंह, उप निदेशक (रा.भा.), विद्युत मंत्रालय की उपस्थिति में हिंदी कार्यशाला के उद्घाटन सत्र का दृश्य

खुर्जा एसटीपीपी

हिंदी कार्यशाला का दृश्य

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, खुर्जा में 10 मार्च, 2026 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), बुलंदशहर के तत्वावधान में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसके उद्घाटन के अवसर पर श्री बिनोद कुमार साहू, मुख्य महाप्रबंधक, परियोजना ने आमंत्रित मुख्य वक्ता श्री प्रेमसिंह, पूर्व संयुक्त निदेशक (राजभाषा विभाग) का स्वागत प्लांट भेंट कर किया। कार्यशाला के प्रथम सत्र में कार्मिकों को राजभाषा नीति, नियम एवं अधिनियमों की जानकारी दी गई । द्वितीय सत्र में कार्मिकों का हिंदी पत्राचार एवं हिंदी टिप्पण लेखन विषय पर ज्ञानवर्धन किया गया। कार्यशाला में 34 अधिकारियों/कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की।

अमेलिया कोल माइन

हिंदी कार्यशाला में मुख्य वक्ता डॉ. एन.पी. प्रजापति का स्वागत करते श्री राजीव गोविल, मुख्य महाप्रबंधक

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, अमेलिया कोल माइन परियोजना में 09 मार्च, 2026 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ परियोजना के वरिष्ठ अधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। इस अवसर पर श्री राजीव गोविल, मुख्य महाप्रबंधक तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। कार्यशाला में मुख्य वक्ता डॉ. एन. पी. प्रजापति, हिंदी के विद्वान एवं विशेषज्ञ का स्वागत श्री राजीव गोविल (मुख्य महाप्रबंधक) द्वारा पुष्प–गुच्छ भेंट कर किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। कार्यशाला के दौरान हिंदी भाषा के महत्व, राजभाषा नीति के प्रावधानों तथा कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रभावी प्रयोग पर विस्तार से चर्चा की गई। विशेषज्ञ वक्ता द्वारा प्रतिभागियों को हिंदी लेखन शैली, कार्यालय के पत्राचार में हिंदी के प्रयोग तथा हिंदी टंकण एवं यूनिकोड के उपयोग के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई।

हिंदी कार्यशाला का दृश्य

परियोजना में 16 जून, 2026 को वित्तीय वर्ष की पहली तिमाही की हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यक्रम के उद्घाटन पर श्री संजीव कुमार मित्तल, अपर महाप्रबंधक द्वारा मुख्य वक्ता एनटीपीसी लिमिटेड के उप महाप्रबंधक (राजभाषा), डॉ. ओम प्रकाश का स्वागत पुष्प–गुच्छ भेंट कर एवं दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। कार्यशाला में डॉ. ओम प्रकाश ने भारत सरकार की राजभाषा नीति, संवैधानिक प्रावधानों, संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षणों और कार्यालयीन कार्यों में द्विभाषिकता की व्यावहारिक चुनौतियों पर विस्तृत एवं उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान किया। इस कार्यक्रम में कार्यालय के वरि. अधिकारीगण श्री डी. एस. राव, श्री शोभन सिंह गुसाईं, श्री एन. के. उपाध्याय और विभिन्न विभागों के कर्मचारी उपस्थित रहे।

विभागाध्यक्षों ने किया कार्मिकों को पुरस्कृत

विभागाध्यक्षों के द्वारा पुरस्कार प्राप्त करते कार्मिक

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में लिए गए निर्णयानुसार विभागाध्यक्षों ने अपने विभाग में हिंदी में अधिकाधिक कार्य कर रहे कार्मिकों को विभागीय बैठकों में पुरस्कृत किया। इस योजना के अंतर्गत एमपीएस के विभागाध्यक्ष, श्री अजय कुमार गोयल, मुख्य महाप्रबंधक ने 03 जून, 2026 को अपने विभाग के श्री संदीप कुमार रावत, अभियंता को प्रथम एवं श्री मनीष कुमार, सहायक प्रबंधक को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया। इसी क्रम में प्रापण के विभागाध्यक्ष, श्री मुकुल गर्ग, अपर महाप्रबंधक ने 30 जून, 2026 को अपने विभाग के श्री अर्पण कुमार, उप प्रबंधक को पुरस्कृत किया।

प्रतियोगिताओं का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय में 'कारपोरेट स्तरीय काव्य पाठ प्रतियोगिता' का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 16 मार्च, 2026 को कारपोरेट स्तरीय काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कारपोरेट कार्यालय के साथ यूनिट/कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की। प्रतियोगिता में 28 अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में विजेताओं का निर्णय 02 सदस्यीय निर्णायक मंडल द्वारा किया गया जिनमें श्री धीरेन्द्र रांगड, साहित्यकार एवं पीएम श्री रा.इ.का. ऋषिकेश के उप प्राचार्य श्री नरेन्द्र सिंह गुलेरिया शामिल थे।

निर्णायकों से प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते श्री अजय रतूड़ी, सहा. अभि..(सतर्कता)

कारपोरेट कार्यालय में 'हिंदी पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता' का आयोजन

निर्णायकों के कर–कमलों से प्रथम पुरस्कार प्राप्त करती श्रीमती काजल परमार, सहा. प्रबंधक (केंद्रीय संचार)

अधिकारियों और कर्मचारियों में पठन–पाठन की संस्कृति को बढ़ावा देने और हिंदी साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न करने के उद्देश्य से पुस्तकालय में 08 मई, 2026 को 'हिंदी पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया जिसका समापन पुस्तकों की समीक्षा के साथ किया गया। यह प्रतियोगिता 20 अप्रैल, 2026 से 08 मई, 2026 तक आयोजित की गई थी। इस अवधि के दौरान कारपोरेट कार्यालय के प्रतिभागी अधिकारियों व कर्मचारियों ने पुस्तकालय से अपनी पसंद की हिंदी पुस्तकें निर्गत कराकर उनका गहन अध्ययन करने के बाद समापन अवसर पर निर्णायक मंडल के समक्ष अपनी उत्कृष्ट समीक्षाएं प्रस्तुत की। प्रतियोगिता में केंद्रीय संचार विभाग की सहायक प्रबंधक, डॉ. काजल परमार ने अपने उत्कृष्ट समीक्षा कौशल की बदौलत प्रथम स्थान प्राप्त किया। विजेताओं को द्वितीय, तृतीय एवं 02 प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्रदान किए गए ।

खुर्जा एसटीपीपी में हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन

खुर्जा एसटीपीपी में कर्मचारियों के लिए 10 मार्च, 2026 को राजभाषा विषयक हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कार्मिकों ने बढ़–चढ़कर प्रतिभागिता की। प्रतियोगिता में विजेता रहे प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं 04 प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम के समापन पर श्री संदीप भटनागर, महाप्रबंधक (वित्त) एवं श्री दिलीप कुमार द्विवेदी, उप महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशासन) ने विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए।

श्री संदीप भटनागर, महाप्रबंधक (वित्त) विजेता कर्मचारियों को पुरस्कृत करते हुए

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति के द्वारा राजभाषा निरीक्षण

एनसीआर कार्यालय कौशांबी का राजभाषा निरीक्षण

माननीय समिति सदस्यों से निरीक्षण प्रमाणपत्र प्राप्त करते श्री नीरज वर्मा, कार्यपालक निदेशक एवं वरि. अधिकारीगण

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति के द्वारा 19 जनवरी, 2026 को टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के एनसीआर कार्यालय, कौशांबी का राजभाषा निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर उप समिति के संयोजक एवं माननीय संसद सदस्य (लोक सभा), श्री उज्ज्वल रमण सिंह, माननीय संसद सदस्य (लोक सभा), श्री शंकर लालवानी, माननीय संसद सदस्य (राज्य सभा), डॉ सुमेर सिंह सोलंकी जी, माननीय संसद सदस्य (लोक सभा), श्री हरिभाई पटेल, माननीय संसद सदस्य (लोक सभा), श्री कुलदीप इन्दौरा, माननीय संसद सदस्य (लोक सभा), श्री जियाउर्रहमान ने एनसीआर कार्यालय, कौशांबी में राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा करते हुए अनेक मूल्यवान सुझाव दिए। इस अवसर पर समिति की सचिव, सुश्री राधा कत्याल नारंग एवं समिति सचिवालय के अधिकारी उपस्थित थे। विद्युत मंत्रालय से श्री धीरज कुमार श्रीवास्तव, मुख्य अभियंता (ईसी, ईटी, ईवी एवं राजभाषा प्रभारी) तथा श्री शमशेर सिंह उप निदेशक(राजभाषा) एवं टीएचडीसी की ओर से श्री नीरज वर्मा, कार्यपालक निदेशक, डॉ अमर नाथ त्रिपाठी, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री के.के. श्रीवास्तव, अपर महाप्रबंधक, श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक(राजभाषा), श्री रोहित जोशी, उप प्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) तथा श्रीमती मीनल श्रीवास्तव, सहा.प्रबंधक (मा.सं.) उपस्थित रहे।

कोटेश्वर यूनिट का राजभाषा निरीक्षण

माननीय समिति सदस्यों से निरीक्षण प्रमाणपत्र प्राप्त करते श्री आर.आर. सोमवाल, मुख्य महाप्रबंधक (टीसी) एवं वरि. अधिकारीगण

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति के द्वारा 25 जून, 2026 को टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कोटेश्वर यूनिट कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर उप समिति के संयोजक एवं माननीय संसद सदस्य (लोक सभा), श्री उज्ज्वल रमण सिंह, माननीय संसद सदस्य (राज्य सभा), श्री अनिल सुखदेवराव बोंडे, माननीय संसद सदस्य (लोक सभा), श्री हरिभाई पटेल, माननीय संसद सदस्य (लोक सभा), श्री जियाउर्रहमान ने कोटेश्वर कार्यालय

में राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा की। समीक्षा के दौरान समिति के माननीय सदस्यों ने टीएचडीसी में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रशंसा करते हुए कुछ सुझाव दिए। इस अवसर पर समिति की सचिव, डॉ निधि पाण्डेय एवं समिति सचिवालय के अधिकारी उपस्थित थे। टीएचडीसी की ओर से विद्युत मंत्रालय से श्री ओ.पी.मीना, मुख्य अभियंता (सीईए, विद्युत मंत्रालय) तथा श्री शमशेर सिंह उप निदेशक(राजभाषा), टीएचडीसी की ओर से श्री आर.आर.सेमवाल, मुख्य महाप्रबंधक (टीसी), डॉ अमर नाथ त्रिपाठी, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री मोहन सिंह, उप महाप्रबंधक (मा. सं. एवं प्रशा.), श्री गिरीश उनियाल, प्रबंधक (मा.सं.), श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा), सुश्री वाणी शुक्ला, सहा.प्रबंधक (रा.भा.) एवं श्रीमती नीरज सिंह, सहा. अधिकारी (रा.भा.) उपस्थित रहे।

आलेख एवं साक्ष्य उपसमिति के द्वारा राजभाषा निरीक्षण एवं विचार–विमर्श कार्यक्रम

22 से 25 मई, 2026

राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन की समीक्षा हेतु संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा दिनांक 22 मई, 2026 से 25 मई, 2026 तक होटल जे.पी. रेजिडेंसी, मसूरी में एक उच्च स्तरीय निरीक्षण एवं विचार–विमर्श कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय संसद सदस्य (लोक सभा), श्री भर्तृहरि महताब ने की। उनके साथ समिति के माननीय सदस्यगण व वरिष्ठ सांसद डॉ. दिनेश शर्मा (राज्य सभा), श्री श्रीयुत श्रीरंग आप्पा बारणे (लोक सभा), श्रीमती माला राज्य लक्ष्मी शाह (लोक सभा), श्री शंकर लालवानी (लोक सभा) तथा श्री सतीश कुमार गौतम (लोक सभा) भी उपस्थित रहे। प्रशासनिक सहयोग हेतु समिति सचिवालय के अधिकारी भी उपस्थित थे।

नराकास टिहरी का निरीक्षणः दिनांक 22 मई, 2026 को टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी (अध्यक्षीय कार्यालय) के तत्वावधान में 06 अन्य सदस्य कार्यालयों के कार्यों का बारीकी से निरीक्षण किया गया। बैठक में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी के मुख्य महाप्रबंधक (टीसी) व नराकास अध्यक्ष, श्री आर.आर. सेमवाल तथा सदस्य सचिव व सहायक प्रबंधक, सुश्री बानी शुक्ला ने भाग लिया।

समिति के माननीय सदस्यों का स्वागत करते श्री आर.आर. सोमवाल, मुख्य महाप्रबंधक (टीसी)

समिति के माननीय अध्यक्ष, श्री भर्तृहरि महताब का स्वागत करते श्री अमर नाथ त्रिपाठी, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)

नराकास हरिद्वार का निरीक्षणः इसी क्रम में 22 मई, 2026 को ही नराकास हरिद्वार के अध्यक्षीय कार्यालय, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, ऋषिकेश के साथ 06 सदस्य संस्थानों के प्रतिनिधियों के साथ विचार–विमर्श बेहद सफल रहा। बैठक में मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) व नराकास हरिद्वार के अध्यक्ष डॉ. अमर नाथ त्रिपाठी तथा सदस्य सचिव व उप प्रबंधक, श्री पंकज कुमार शर्मा ने भाग लिया।

नराकास चमोली का निरीक्षणः दिनांक 23 मई, 2026 को एनटीपीसी, जोशीमठ के अध्यक्षीय कार्यालय के साथ–साथ समिति ने विशेष रूप से टीएचडीसी के वीपीएचईपी, पीपलकोटी कार्यालय का भी निरीक्षण किया। इस दौरान पीपलकोटी के कार्यालय प्रमुख एवं कार्यपालक निदेशक, श्री अजय वर्मा तथा वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन), श्री वी.डी. भट्ट सहित 05 अन्य कार्यालयों के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

समिति के माननीय सदस्यों से निरीक्षण प्रमाणपत्र प्राप्त करते श्री अजय वर्मा, कार्यपालक निदेशक

बैठक के शुभारंभ पर नराकास के अध्यक्ष द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया। इसके उपरांत समिति के माननीय अध्यक्ष एवं सभी माननीय संसद सदस्यों का शॉल ओढ़ाकर तथा पुष्पगुच्छ भेंट कर पारंपरिक और आत्मीय अभिनंदन किया गया। विस्तृत समीक्षा और विचार–विमर्श के सत्र सफलतापूर्वक संपन्न होने पर उप समिति द्वारा नराकासों को उनके उत्कृष्ट राजभाषा कार्यों के लिए आधिकारिक प्रमाण–पत्र प्रदान किए गए।

विद्युत मंत्रालय के अधिकारियों के द्वारा राजभाषा निरीक्षण

कारपोरेट कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण

विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार के उप निदेशक (राजभाषा), श्री शमशेर सिंह ने 06 जनवरी, 2026 को निगम के कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश का राजभाषा निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान श्री डी.पी. पात्रो, अपर महाप्रबंधक (मा.सं–भर्ती) ने श्री शमशेर सिंह का स्वागत शॉल एवं प्लांट भेंट कर किया। टीएचडीसी के उप प्रबंधक (राजभाषा), श्री पंकज कुमार शर्मा ने श्री सिंह को टीएचडीसी में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति के संबंध में अवगत कराया एवं राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित प्रस्तुतीकरण दिया। इस अवसर पर कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। श्री सिंह ने टीएचडीसी में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रशंसा करते हुए कहा कि मंत्रालय की दृष्टि से टीएचडीसी में राजभाषा कार्यान्वयन उत्कृष्ट श्रेणी में आता है। उन्होंने इस अवसर पर अनेक बहुमूल्य सुझाव भी दिए।

राजभाषा निरीक्षण के दौरान आयोजित बैठक में विचार–विमर्श करते श्री शमशेर सिंह, उप निदेशक (रा.भा.) एवं टीएचडीसी के वरि. अधिकारीगण

टिहरी यूनिट का राजभाषा निरीक्षण

07 जनवरी, 2026 को श्री शमशेर सिंह, उप निदेशक(राजभाषा), विद्युत मंत्रालय ने टिहरी यूनिट में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति का निरीक्षण किया। इस अवसर पर श्री एम.के.सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (टिहरी कॉम्प्लेक्स) ने श्री सिंह का

श्री शमशेर सिंह, उप निदेशक (रा.भा.) को टिहरी बांध का मॉडल भेंट करते श्री एम.के. सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (टीसी)

स्वागत पुष्प गुच्छ एवं पुस्तक भेंट कर किया। सुश्री बानी शुक्ला, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) ने श्री सिंह को टिहरी यूनिट में राजभाषा संबंधी गतिविधियों के बारे में अवगत कराया। निरीक्षण कार्यक्रम में श्री एम.के. सिंह के साथ टिहरी एवं कोटेश्वर यूनिट कार्यालयों में तैनात वरि. अधिकारी उपस्थित रहे। जिन्होंने श्री सिंह के साथ राजभाषा विषयक मुद्दों पर खुलकर चर्चा की तथा यूनिट में राजभाषा कार्यान्वयन को और बेहतर करने का आश्वासन दिया।

खुर्जा एसटीपीपी का राजभाषा निरीक्षण

15 जून, 2026 को श्री सुशील कुमार, सहा. निदेशक (राजभाषा), विद्युत मंत्रालय ने खुर्जा एसटीपीपी का दौरा किया और राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति का निरीक्षण किया। इस अवसर पर श्री सुशील कुमार एवं उनके साथ मंत्रालय से पधारे श्री अनिल कुमार, कनिष्ठ अनुवादक एवं श्री विनय कुमार, निजी सचिव का स्वागत प्लांट एवं शॉल भेंट कर किया गया।

निरीक्षण बैठक में विचार–विमर्श करते श्री सुशील कुमार, सहा. निदेशक (रा.भा.) एवं खुर्जा यूनिट के वरि. अधिकारीगण

निरीक्षण के दौरान निरीक्षणकर्ता अधिकारी ने राजभाषा कार्यान्वयन के उन्नयन हेतु कुछ आवश्यक निर्देश एवं महत्वपूर्ण सुझाव दिए। इस अवसर पर खुर्जा एसटीपीपी की ओर से श्री बिनोद कुमार साहू, मुख्य महाप्रबंधक (परियोजना), श्री दिलीप कुमार द्विवेदी, उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन–राजभाषा प्रभारी) तथा श्री यशवंत सिंह नेगी, कनिष्ठ अधिकारी (हिंदी) उपस्थित थे । कारपोरेट कार्यालय की ओर से श्री संतोष टेलकीकर, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), श्री नरेश सिंह, सहायक अधिकारी (राजभाषा) ने बैठक में भाग लिया।

एनसीआर कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण

निरीक्षण के दौरान श्री शमशेर सिंह, उप निदेशक (रा.भा.) का स्वागत करते श्री जी. राधा कृष्णन, अपर महाप्रबंधक (वित्त)

23 जून, 2026 को श्री शमशेर सिंह, उप निदेशक (राजभाषा), विद्युत मंत्रालय ने एनसीआर कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण किया। इस अवसर पर श्री शमशेर सिंह का स्वागत श्री जी. राधा कृष्णन, अपर महाप्रबंधक (वित्त) ने प्लांट एवं शॉल भेंट कर किया । निरीक्षण के दौरान श्री सिंह ने कार्यालय के विभिन्न दस्तावेजों का मूल रूप से निरीक्षण किया। इस अवसर पर एनसीआर कार्यालय की ओर से अनेक वरि.अधिकारी तथा राजभाषा से जुड़े अधिकारी उपस्थित थे।

कारपोरेट कार्यालय में 05 दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 09 से 13 मार्च, 2026 तक 05 दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के माध्यम से संचालित किया गया जिसमें कारपोरेट कार्यालय के 28 अधिकारियों व कर्मचारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्यक्रम का उद्घाटन 09 मार्च, 2026 को डा.ए.एन.त्रिपाठी, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के निदेशक, लेफ्टिनेंट कर्नल श्री रामनरेश शर्मा एवं संकाय सदस्य, डॉ. मोहन चन्द्र बहुगुणा, सहायक निदेशक ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। सर्वप्रथम श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक(राजभाषा) ने कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं सभी प्रमुख अतिथियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया और कार्यक्रम की रूपरेखा पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ

इस अवसर पर ब्यूरो के निदेशक, श्री रामनरेश शर्मा ने अपने संबोधन में 05 दिवसीय संक्षित अनुवाद प्रशिक्षण की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हालांकि, आजकल अनुवाद के लिए अनेक ई–टूल्स प्रचलन में आ गए हैं जो काफी हद तक अनुवाद कार्य कर रहे हैं परन्तु इस अनुवाद को अंतिम नहीं माना जा सकता क्योंकि मशीनी अनुवाद कितना ही सटीक क्यों न हो परन्तु यह किसी व्यक्ति की सोच से आगे नहीं जा सकता । मशीनी अनुवाद को एक बार अवश्य ही पढ़ा जाना चाहिए ताकि इसमें रह गई त्रुटियों को दूर किया जा सके।

कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागी

प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र वितरण का दृश्य

कार्यक्रम के अध्यक्ष, श्री त्रिपाठी ने सर्वप्रथम केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के अधिकारियों का टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड में इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को संचालित करने हेतु धन्यवाद दिया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा अंग्रेजी के शब्दों के हिंदी में अनेक अर्थ होते हैं, इसलिए यह आवश्यक है कि अनुवाद करते समय यह सुनिश्चित कर लिया जाए कि कौन सा शब्द वाक्य में सटीक अर्थ दे रहा है। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से इस कार्यक्रम में गहन रूचि लेने का आह्वान किया ताकि हिंदी में कार्य करने में परेशानी न हो। 05 दिन चले इस कार्यक्रम में विभिन्न सत्रों में केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के डॉ. मोहन चन्द्र बहुगुणा, सहायक निदेशक एवं श्री आकाशदीप, सहायक निदेशक ने अनुवाद के विभिन्न पहुलओं पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के समापन पर प्रतिभागियों को केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के द्वारा प्रशिक्षण प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

नराकास हरिद्वार की 41वीं अर्धवार्षिक बैठक संपन्न

दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते समिति के अध्यक्ष डॉ. अमर नाथ त्रिपाठी, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.), आईआईटी रूड़की के निदेशक, श्री कमल किशोर पंत एवं अन्य अधिकारीगण

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 41वीं अर्धवार्षिक बैठक 29 जनवरी, 2026 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता टीएचडीसी के मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), डॉ. अमर नाथ त्रिपाठी ने की । बैठक में समिति के सदस्य संस्थानों के प्रमुखों/प्रतिनिधियों एवं राजभाषा अधिकारियों ने बड़ी संख्या में प्रतिभागिता की। कार्यक्रम में सर्वप्रथम समिति के अध्यक्ष, डॉ अमर नाथ त्रिपाठी, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की के निदेशक, प्रो. कमल किशोर पंत, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के राजभाषा प्रभारी, प्रो. अविनाश पाराशर, राजभाषा विभाग के उप निदेशक, श्री छबिल मेहेर एवं विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के कुल गीत का गायन किया गया। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक, प्रो. कमल किशोर पंत ने स्वागत संबोधन प्रस्तुत किया ।

कार्यक्रम में उपस्थित संस्थानों के प्रमुख एवं प्रतिनिधि

बैठक के दौरान पुरस्कार वितरण समारोह में समिति के अध्यक्ष, डॉ त्रिपाठी एवं मंचासीन अतिथिगणों ने अपने कर–कमलों से छमाही के दौरान नराकास के तत्वावधान में आयोजित हुई प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया। बैठक में वर्ष 2024–25 के दौरान अपने संस्थानों में राजभाषा का श्रेष्ठ कार्यान्वयन सुनिश्चित करने वाले संस्थानों को भी नराकास राजभाषा वैजयंती योजना के अंतर्गत सम्मानित किया गया। बैठक में समिति के सदस्य सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा द्वारा नराकास हरिद्वार द्वारा आयोजित गतिविधियों एवं राजभाषा से संबंधित नवीनतम जानकारियों से अवगत कराया गया । उन्होंने राजभाषा हिंदी की प्रगति की अर्धवार्षिक रिपोर्टो की समीक्षा की। इसके उपरांत चर्चा सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें उपस्थित सदस्य संस्थानों के प्रमुख एवं प्रतिनिधियों ने अपने बहुमूल्य सुझाव दिए। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उप निदेशक (कार्यान्वयन), श्री छबिल कुमार मेहेर ने भारत सरकार की राजभाषा नीति, संविधान में राजभाषा के संबंध में किए गए प्रावधानों, राजभाषा अधिनियम, 1963 एवं राजभाषा नियम, 1976 में दिए गए प्रावधानों के बारे में जानकारी दी। समिति के अध्यक्ष, डॉ. त्रिपाठी ने अपने संबोधन में प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं नराकास वैजयंती योजना के अंतर्गत पुरस्कृत किए गए संस्थानों को बधाई दी। उन्होंने गत वर्ष 15 सितंबर, 2025 को नराकास हरिद्वार को गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा प्रशंसनीय श्रेणी में पुरस्कृत किए जाने पर सभी संस्थानों को बधाई एवं शुभकामनाएं संप्रेषित की। उन्होंने कहा कि नराकास हरिद्वार के सभी कार्यक्रम एवं गतिविधियां समय पर संचालित हो रही हैं, आवश्यकता है कि सभी सदस्य संस्थानों के प्रमुख समिति की बैठकों में नियमित रूप से भाग लें ताकि यह नराकास भविष्य में उत्कृष्ट श्रेणी में पुरस्कृत हो सके।

अंग्रेजी के लोकप्रिय मुहावरे (Idioms) और उनके हिंदी पर्याय

1.	A piece of cake	बहुत आसान काम / बच्चों का खेल होना
2.	Break a leg	शुभकामनाएँ देना (विशेषकर किसी प्रदर्शन से पहले)
3.	Under the weather	अस्वस्थ महसूस करना
4.	Once in a blue moon	कभी–कभार/बहुत दुर्लभ/ईद का चांद होना
5.	Blessing in disguise	छिपे हुए रूप में वरदान/जो होता है, अच्छे के लिए होता है।
6.	Bite the bullet	कठिन परिस्थिति का साहसपूर्वक सामना करना/कडवा घूंट पीना
7.	Call it a day	आज का काम यहीं रोकना
8.	Cost an arm and a leg	बहुत भारी कीमत चुकाना/किडनी बेचकर खरीदना
9.	Hit the nail on the head	सौ फीसदी सच कहना/नब्ज पकड़ लेना
10.	Miss the boat	अब पछताए होत क्या जब चिड़ियां चुग गईं खेत/मौका हाथ से निकलना
11.	Speak of the devil	शैतान का नाम लिया और शैतान हाजिर/लंबी उम्र है तुम्हारी
12.	Through thick and thin	धूप–छांव में साथ रहना/हर मोड़ पर साथ निभाना
13.	Add insult to injury	जले पर नमक छिड़कना
14.	Best of both worlds	दोनों हाथों में लड्डू
15.	Take it with a grain of salt	किसी बात पर पूरी तरह से विश्वास न करना
16.	Cut corners	समय या पैसे बचाने के लिए शॉर्टकट अपनाना
17.	It's not rocket science	यह कोई बहुत कठिन काम नहीं है
18.	Pull someone's leg	टांग खींचना/किसी को बेवकूफ बनाकर मजा लेना
19.	Play devil's advocate	बेवजह बहस करना
20.	Burn the midnight oil	दिन–रात एक करना/रात की नींद हराम करना

 विश्वास वह पक्षी है जो प्रभात के पूर्व अंधकार में ही प्रकाश का अनुभव करता है और गाने लगता है – *रवीन्द्रनाथ ठाकुर*

एनसीआर कार्यालय क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित

माननीय केंद्रीय गृह राज्यमंत्री, श्री बंडी संजय कुमार के कर–कमलों से पुरस्कार प्राप्त करते श्री संदीप चैकर, महा प्रबंधक (प्रभारी)

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी को 20 फरवरी, 2026 को उत्तर क्षेत्र–2 के अंतर्गत क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार (तृतीय) से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार अगरतला, त्रिपुरा में आयोजित हुए पूर्व, पूर्वोत्तर एवं उत्तरी क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में प्रदान किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इसमें त्रिपुरा के माननीय मुख्यमंत्री, श्री माणिक शाह, माननीय केंद्रीय गृह राज्यमंत्री, श्री बंडी संजय कुमार, त्रिपुरा के माननीय सांसद, श्री राजीव भट्टाचार्जी, माननीय सांसद, श्री बिप्लव कुमार देब, माननीय सांसद, लोकसभा, त्रिपुरा (पूर्व), प्रो. मिलन रानी जमातिया, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, डॉ बी.पी. फिलिप, अध्यक्ष, नागरी लिपि परिषद, नागालैंड, श्रीमती अंशुली आर्या, सचिव, राजभाषा विभाग ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। सम्मेलन में अनेक गणमान्य व्यक्ति एवं पूर्व, पूर्वोत्तर, एवं उत्तरी क्षेत्रों के केंद्र सरकार के कार्यालयों के बड़ी संख्या में अधिकारी एवं कर्मचारी सम्मिलित हुए। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को यह पुरस्कार माननीय केंद्रीय गृह राज्यमंत्री, श्री बंडी संजय कुमार के कर–कमलों से प्राप्त हुआ। टीएचडीसी की ओर से श्री संदीप चेकर, महाप्रबंधक (प्रभारी) एवं श्री के. सूर्या मौली, सहायक प्रबंधक (मा.सं.), एनसीआर कार्यालय, कौशांबी ने पुरस्कार प्राप्त किया। इस अवसर पर टीएचडीसी के अनेक अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

कारपोरेट कार्यालय प्रथम नराकास राजभाषा वैजयंती से सम्मानित

समिति के माननीय अध्यक्ष, श्री अमर नाथ त्रिपाठी के कर–कमलों से पुरस्कार प्राप्त करते कारपोरेट हिंदी अनुभाग के अधिकारी व कर्मचारी

टीएचडीसी के कारपोरेट कार्यालय को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 29 जनवरी, 2026 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की में आयोजित हुई 41वीं अर्धवार्षिक बैठक में सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों की श्रेणी में प्रथम नराकास वैजयंती पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर नराकास हरिद्वार के सदस्य संस्थानों के प्रमुख एवं प्रतिनिधि उपस्थित थे।

रामधारी सिंह दिनकर
(23 सितंबर,1908–24 अप्रैल,1974)

> **जला अस्थियां बारी–बारी, चटकाई जिनमें चिंगारी,**
> **जो चढ़ गये पुण्यवेदी पर, लिए बिना गर्दन का मोल।**
> **कलम, आज उनकी जय बोल।**
>
> **जो अगणित लघु दीप हमारे, तूफानों में एक किनारे,**
> **जल–जलकर बुझ गए किसी दिन, मांगा नहीं स्नेह मुंह खोल।**
> **कलम, आज उनकी जय बोल।**

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED
(अनुसूची 'ए' मिनी रत्न कैटेगरी-I, पीएसयू, एनटीपीसी लिमिटेड की सहायक कंपनी)
(Schedule 'A' Mini Ratna Category-I PSU, a subsidiary of NTPC Limited)
गंगा भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड, ऋषिकेश–249201 (उत्तराखंड)
दूरभाष: 0135–2473614, वेबसाइट: http://www.thdc.co.in
श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (हिंदी) द्वारा टीएचडीसी इंडिया लि. के लिए प्रकाशित
(नि:शुल्क आंतरिक वितरण के लिए)

www.paromita.org